Publication date- 5th June 2024, Posting date- 9/10th June 2024. Place of posting- Naraina
संख्या No. U (W)-11/2024-26 RNI No. DELBIL/2005/16236 Postal Regn. No. DL (W) 10/2129/24-26

RNI No. DELBIL/2005/16236

श्रद्धा सबूरी

श्री साई सुमिरन टाइम्स

मासिक समाचार पत्र

वर्ष-20 अंक-9 नई दिल्ली जून 2024 वार्षिक मूल्य 500 रू. (प्रति कॉपी 50 रू.) पृष्ठ-16

श्री साई ज्ञानेश्वरी ए पिक्टोरियल एलबम का लोकार्पण

दिल्ली: दिनांक 18 मई 2024 को सद्गुरू श्री साईनाथ महाराज की असीम कृपा से श्री राकेश जुनेजा जी के निवास स्थान सहारा ग्रेस, एम.जी. रोड, गुरूग्राम में श्री साई ज्ञानेश्वरी: पिक्टोरियल एलबम का लोकार्पण किया गया। श्री राकेश जुनेजा की दूरदृष्टि, लगन एवं अथक श्रम से तीन वर्षों से इस चित्रमय पुस्तक का निर्माण किया गया। पुस्तक का लोकार्पण श्री सुरेन्द्र कुमार घई, श्री मोतीलाल गुप्ता, श्री विजय राघवन, सुश्री अंजु टंडन, श्री राजेश रतन शर्मा, श्रीमती इंदु खुराना, श्री भीम आनंद आदि साई-भक्तों के कर-कमलों से किया गया।

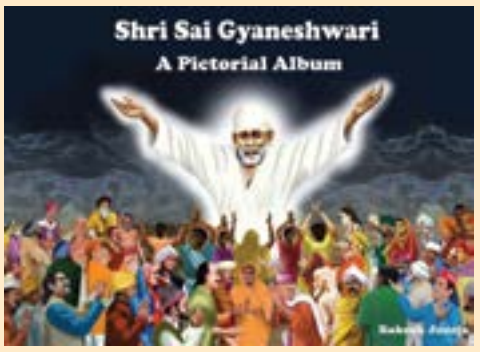

इस अवसर पर अपने वक्तव्य में श्री सुरेन्द्र कुमार घई ने कहा कि पिक्टोरियल एलबम तैयार करना अत्यन्त श्रमसाध्य कार्य है। साई के ज्ञान के अनुसार चित्र तैयार किए गये हैं। साई के ज्ञान को अंग्रेजी एवं हिन्दी में दिया गया। पुस्तक में लगभग 140 रंगीन चित्र हैं जो साई के युग की यादों को ताज़ा कर देते हैं।

श्री राकेश जुनेजा ने कहा कि पिक्टोरियल एलबम वर्तमान युग एवं वर्तमान समय के लिए अधिक उपयोगी है। बच्चे एवं किशोर चित्र के माध्यम से शिक्षण करने में अधिक रूचि रखते हैं। उनके ज्ञान के लिए यह एलबम बहुत उपयुक्त है। अधिक उम्र के लोग जिन्हें पढ़ने में कठिनाई होती है, वे चित्रों को देखकर साई से जुड़ जाते हैं। युवा-वर्ग जिनकी जीवन शैली अति-व्यस्त है, वे कम-समय में ही चित्रों को देखकर साई की कथाओं और लीलाओं का आनंद ले सकते हैं। भौतिकवादी इस युग में अल्प-समय में अध्यात्म से जुड़ने के लिए यह पिक्टोरियल एलबम एक सशक्त माध्यम है।

पिक्टोरियल एलबम के चित्र सुप्रसिद्ध चित्रकार साई रतन राजेश शर्मा ने बनाए। चित्रमय कथा का कंसेप्ट एवं अंग्रेज़ी आलेख राकेश जुनेजा ने तैयार किया। अंग्रेज़ी एडिटिंग का कार्य श्री संजीव सरीन ने किया। हिन्दी आलेख डॉ. राजेन्द्र सुराना ने तैयार किया। कम्प्यूटर का कार्य श्री जितेन्द्र कुमार एवं अमरप्रीत सिंह ने किया। इस पुस्तक का सुन्दर एवं मनोहारी प्रकाशन स्टर्लिंग पब्लिशर्स ने किया।

पुस्तक लोकार्पण के साथ-साथ साई संध्या का भी भव्य आयोजन किया गया। श्री प्रवीन मुदगल ने सुमधुर भजनों से अनोखा समां बांधा और पूरे वातावरण को अध्यात्मय बना दिया। इस अवसर पर लगभग दो सौ साई भक्तों की गरिमामई उपस्थिति रही। कार्यक्रम के पश्चात् सभी को साई-प्रसाद एवं पिक्टोरियल एलबम उपहार स्वरूप भेंट दिया गया। अंत में साई बाबा की आरती के साथ इस कार्यक्रम का समापन हुआ।

-जितेन्द्र कुमार

गुरूपूर्णिमा पर साई मंदिर रोहिणी में विशेष कार्यक्रम का आयोजन

दिल्ली: हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी शिरडी साई बाबा मंदिर, सैक्टर-7, रोहिणी में 21 जुलाई 2024 को गुरूपूर्णिमा महोत्सव मनाया जाएगा। इस पावन अवसर पर दिनभर विभिन्न गायकों द्वारा भजनों का गुणगान चलता रहेगा। मध्यान्ह आरती के बाद सभी भक्तों को भंडारा वितरित किया जायेगा।

कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के प्रधान श्री के.एल. महाजन, उपप्रधान श्री संजीव अरोड़ा, महासचिव श्री रमेश कोहली, कोषाध्यक्ष श्री अशोक रेखी, सचिव श्रीमती प्रोमिला मखीजा एवं सदस्य श्री पी.डी. गुप्ता, श्री बी.पी. मखीजा व श्री विमल शर्मा द्वारा किया जायेगा।

मंदिर कार्यकारिणी समिति की तरफ से सभी भक्तों से निवेदन है कि गुरू पूर्णिमा के पावन अवसर पर मंदिर में सपरिवार आकर अपने सद्गुरू साईनाथ महाराज का आशीर्वाद प्राप्त करें। **-कृष्णा पुरी**

श्री साई समिति नोयडा द्वारा ग्रेटर नोयडा में स्कूल का निर्माण

ग्रेटर नोयडा: शिरडी साई बाबा मंदिर, सैक्टर-40, नोयडा में मंदिर की श्री साई समिति के सदस्यों द्वारा धार्मिक कार्यों के साथ-साथ अनेक समाज सेवा के कार्य भी किये जाते हैं। श्री साई समिति द्वारा गरीब बच्चों के लिए साई विद्या निकेतन स्कूल चलाया जाता है जिसमें गरीब बच्चों को मुफ्त शिक्षा दी जाती है। बाबा

अच्छी शिक्षा देना है ताकि गरीब बच्चे भी समाज में अन्य बच्चों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल सकें और अपना भविष्य उज्जवल बना सकें। श्री साई समिति द्वारा उठाया यह कदम हज़ारों बच्चों के जीवन में नई रोशनी व नयी दिशा लेकर आएगा। दिनांक 13 अप्रैल 2023 को ग्रेटर नोयडा, सैक्टर-2 में इस स्कूल के निमार्ण के लिए भूमि पूजन श्री नीरज प्रकाश जी, श्री विजय राघवन जी, श्री गिरीश जोशी, डॉ. नीरज शर्मा, श्री बी.एल. गर्ग, डॉ अजयमनी त्रिपाठी एवं श्री आर.के. शर्मा के कर कमलों द्वारा किया गया था। **-कंचन**

की असीम कृपा से अब लगभग 1000 बच्चों के लिए एक नये एवं आधुनिक स्कूल का निर्माण किया जा रहा है। इस स्कूल में विद्यार्थियों को उच्च स्तर की शिक्षा दी जाएगी। इस स्कूल के निर्माण का उद्देश्य गरीब एवं ज़रूरतमंद बच्चों को

साई बाबा ने ही मुझे बचाया

मैं बिद्युत शर्मा, सरूपथार (असम) में रहता हूं। मैं बाबा का भक्त हूं। सरूपथार में बाबा का कोई मंदिर नहीं था, मेरी बहुत इच्छा थी कि मैं यहां पर बाबा का मंदिर बनवाऊं। 6-7 साल के प्रयास, कड़ी मेहनत और कुछ भक्तों के सहयोग से और बाबा की कृपा से सरूपथार, गोलाघाट, असम में साईं बाबा का मन्दिर बन कर तैयार हो गया और 15 जनवरी 2024 को साई बाबा की प्राण प्रतिष्ठा की गई और अब वहां पर साई बाबा विराजित हैं। मैं बहुत खुश हूं कि बाबा ने मुझे सेवा का मौका दिया। मेरे साथ बाबा की कृपा के कई अनुभव हो चुके हैं। मैं हॉल ही में अपने साथ हुए एक अनुभव के बारे में आपको बताना चाहता हूं। अभी कुछ दिन पहले मेरी तबीयत बहुत ज़्यादा खराब हो गई थी। मुझे छाती में बहुत दर्द हुआ जिसकी वजह से मैं रातभर सो भी नहीं पाया। मुझे हॉस्पीटल ले गये। मैं बाबा की फोटो और उदि अपने साथ लेकर गया था। डॉक्टर ने मुझे दवाईयां दी

लेकिन मेरी तबीयत में सुधार नहीं हुआ तो डाक्टर ने ECG करवाया। मेरी ECG की रिपोर्ट ठीक नहीं आयी। डाक्टर ने कहा कि मुझे दिल की बीमारी हो सकती है और मुझे ICU में भेज दिया। वहां जाकर मेरी आंखों से आंसू आ गये। मैंने बाबा से कहा कि मैंने आज तक कुछ गलत नहीं किया, किसी का भी कोई पैसा नहीं मारा, मंदिर में लोग कितना पैसा दे जाते हैं पर मैंने मंदिर का कोई पैसा इधर-उधर नहीं किया। मेरा बेटा अभी छोटा है, मुझे अगर हार्ट की बीमारी हो गई तो मेरे परिवार का क्या होगा। उसके बाद डॉक्टरों ने मेरे कुछ और टैस्ट किये और फिर से ECG किया। बाबा की कृपा से मेरी सभी रिपोर्ट्स नार्मल आयीं। डॉक्टर ने कहा कि आप का ECG ठीक है आपको कोई दिल की बीमारी नहीं है। उन्होंने मुझे ICU से वार्ड में शिफ्ट कर दिया। डॉक्टर ने बताया कि आपने कुछ गलत चीज़ खा ली थी जिसकी वजह से आपको तकलीफ हुई। दो दिन बाद बाबा की कृपा से मुझे अस्पताल से छुट्टी मिल गई। मेरे बहुत से जानने वालों को जब मेरी हालत का पता चला तो सबने मेरे लिए बाबा से प्रार्थना की। शायद सभी की प्रार्थना सुन बाबा ने मुझे ठीक कर दिया। मैं उन सब लोगों का आभारी हूं जिन्होंने मेरे लिए बाबा से प्रार्थना की। मुझे लगता है कि अगर बाबा की कृपा हो तो हर मुश्किल आसान हो जाती है। बस हमें बाबा में विश्वास रखना चाहिए और किसी का कभी दिल नहीं दुखाना चाहिए और अच्छे कर्म करते रहना चाहिए। **-विद्युत शर्मा,** असम

शिरडी की दर्शन कतार कम्पलैक्स में लड्डू प्रसाद बिक्री काउंटर का उद्घाटन

शिरडी: दिनांक 30 मई 2024 को शिरडी में नई दर्शन कतार कम्पलैक्स में लड्डू प्रसाद के बिक्री काउंटर का उद्घाटन शिरडी संस्थान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री गोरक्ष गाडिलकर जी के कर कमलों द्वारा किया गया। उद्घाटन के बाद पूजा अर्चना व आरती की गई। अब भक्तगण इस काउंटर से लड्डू प्रसाद खरीद सकते हैं। इस अवसर पर श्री तुकाराम हुलवले, श्री दिनकर देसाई,

श्री शरद डोखे, श्री परवीन मिरजकर व श्री अनिल भनगे भी उपस्थित रहे।

सम्पादकीय

साई बाबा तीन लोक के स्वामी होते हुए भी कुछ घरों से भिक्षा मांग कर निर्वाह करते थे और उन्होंने बहुत ही सादगी से जीवन व्यतीत किया। बाबा ने मानव रूप में अवतार लेकर, अहंकार शून्य होकर लोगों में आध्यात्मिक उत्थान किया और उनका कल्याण किया। लोगों को जीवन जीने की सही राह दिखाई। बाबा के समय जो भक्त थे उनकी बाबा के प्रति श्रद्धा और सच्ची भक्ति भी हमें बहुत कुछ सिखाती है। लेकिन आजकल बाबा के भक्तों में भक्ति कम और दिखावा ज्यादा देखने को मिलता है। लोग बाबा का प्रचार प्रसार भूलकर स्वयं अपना नाम करने में ज्यादा उत्सुक होते हैं। कई लोग बाबा के नाम का केवल अपने स्वार्थ के लिए गलत इस्तेमाल करते हैं। बाबा को जानने के लिए श्री साई सच्चरित्र पढ़ना चाहिए और जो कुछ भी पढ़ो उस पर अमल करना अति आवश्यक है, वरना पढ़ने का कोई लाभ नहीं। हमारे जीवन का ध्येय बाबा को पाना है और बाबा को पाने के लिए किसी भी बिचौलिए की भी ज़रूरत नहीं है। जो आवागमन के चक्र से मुक्त होना चाहते हैं उन्हें बाबा के बताए मार्ग पर चलना चाहिए और शांत और स्थिर होकर सादगी से अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए। जो पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से उनकी लीलाओं का श्रवण व मनन करेगा तथा सांसारिक वस्तुओं व अपनी प्रसिद्धि, मान सम्मान आदि की चिंता त्याग देगा उसे निस्संदेह ही आत्मानुभूति की प्राप्ती होगी। -अंजु टंडन

भाऊ के रूप में आए बाबा

मेरा नाम सरिता मोहला है, मैं हरिद्वार में रहती हूं। मेरी बाबा के प्रति बहुत श्रद्धा है। बाबा भी अपनी कृपा हम भक्तों पर रखते हैं। हम 31 दिसम्बर की रात हमेशा बाबा के पास शिरडी में मनाते हैं। हमारा नया साल बाबा के आशीर्वाद से ही शुरू होता है, परन्तु इस बार किसी कारण ववश हम नये साल पर शिरडी नहीं जा पाये। हमारे घर के पास मेरी एक सहेली भावना शर्मा रहती है, उनकी भी बाबा में बहुत श्रद्धा है। एक दिन उन्होंने मुझसे कहा कि मेरा शिरडी जाने का बहुत मन है। वो 30 साल से बाबा की शरण में हैं पर कभी शिरडी नहीं गई। मैंने उनसे कहा कि चलो हम शिरडी चलते हैं। मेरा मन तो बहुत कर रहा था पर पैसों की दिक्कत थी। मेरा मन बहुत उदास था मैं बाबा से मन ही मन कह रही थी बाबा हम क्या करें, कैसे शिरडी आऐं। मेरी सहेली भावना ने कहा कि हम शिरडी की टिकट बुक कराते हैं। दो दिन बाद रंगपंचमी थी। हमने टिकट तो ले ली पर हमारी सीट कन्फर्म नहीं थी। बाबा का नाम लेकर हम चल पड़े। ट्रेन में लोगों ने हमें बैठने की सीट भी दे दी और हम आराम से बिना किसी परेशानी के शिरडी पहुंच गये। ये बाबा की ही कृपा थी कि हमारे पास सीट न होते हुए भी हमने आराम से बैठ कर पूरी यात्रा की। सुबह शिरडी पहुंच कर हम लोग भक्तानिवास में कमरा बुक कराने के लिए सुबह 8 बजे पहुंच गये। वहां पहुंच कर हमें पता चला कि कमरे की बुकिंग के लिए खिड़की 2 बजे खुलेगी। यह सुनकर हम थोड़े परेशान हो गये। हम बहुत थके हुए थे। हमने सोचा कि अब हम क्या करें। भावना ने अपने एक जानने वाले को फोन किया पर उन्होंने फोन नहीं उठाया। तभी मुझे ख्याल आया कि पिछली बार जब हम आये थे तो हमें एक भैया, संदीप भाऊ मिले थे, जिनका शिरडी में साई संगम होटल है और हम उनको भाऊ कहते हैं। हालांकि उनसे हमारी ज्यादा जान पहचान नहीं थी पर कभी-कभी साई राम हो जाती थी। तब मैंने संदीप भाऊ को फोन किया और जैसे ही साईराम कहा तो जवाब में उन्होंने कहा आप शिरडी में आए हो, आप हमारे होटल में आ जाओ। उन्होंने कहा आप कहां हो मुझे बताओ मैं आपके लिए गाड़ी भेजता हूं। उनकी बात सुनकर हम हैरान हो गये कि ये क्या हो गया। मैंने मन ही मन बाबा से कहा कि बाबा आपको पता चल गया कि हम शिरडी आए हैं और आपने हमारा रहने का इंतज़ाम भी कर दिया। संदीप भाऊ ने हमारे लिए गाड़ी भेजी और हम उनके होटल साई संगम में पहुंच गये। हम होटल में एक सप्ताह तक रहे। संदीप भाऊ ने हमारे लिए वहां खाने का भी प्रबन्ध किया और मंदिर आने-जाने के लिए गाड़ी भी दी। हम बाबा का ये चमत्कार देखकर हैरान हो गये।

एक दिन भावना दर्शन के लिए लाईन में खड़ी थी उसकी इच्छा बाबा को फूल चढ़ाने की थी उसने मुझे कहा कि यहां फूल वाले क्यों नहीं आते। तभी एक फूलवाला भावना के पास आकर खड़ा हो गया, मैंने उससे कहा कि देखो तुम्हारी इच्छा फूल चढ़ाने की थी, तो फूल वाला भी आ गया। इस तरह हमारे साथ बाबा के बहुत से चमत्कार हुए जिससे बाबा के प्रति हमारा विश्वास और दृढ़ हो गया। बाबा से प्रार्थना है कि हम पर सदैव अपनी कृपा ऐसे ही बनाये रखें। ॐ साई राम। **-सरिता मोहला**, हरिद्वार

भय से मुक्ति दिलाई बाबा ने

मैं डॉक्टर नीरज कुमार श्री साई बाबा का अनन्य भक्त हूं। मेरी भक्ति को देखते हुए वर्तमान समय में मेरे परिवार और संबंधी भी श्री साईबाबा के उपासक बन गये हैं, और कईयों को श्री साईबाबा की उपासना का लाभ भी प्राप्त हुआ है।

मेरा साढ़े तीन वर्ष का बेटा जिसका नाम ईशान है। वह चंचल स्वभाव का है। ईशान जब रात को सोता था तो कई बार डर कर उठ जाता था और अनाप-शनाप बोलने लगता और कांपने लग जाता था। वो नींद में बोलता था, मम्मी उसे भगाओ, वह मुझे मारेगा, वो मेरी तरफ आ रहा है। वो इस तरह की हरकतें कई बार करने लगा। जिसके चलते मैं और मेरी पत्नी चिन्तित रहने लगी। श्री साई बाबा का संचार हुआ कि इसे उदि दो, सब ठीक हो जाएगा, चिंता की बात नहीं है। मैंने अपनी पत्नी को कहा कि ईशान को सोते समय बाबा की उदि लगा दो और थोड़ी पानी में मिलाकर पिला दो। पत्नी ने मेरे कहे अनुसार ही किया और साथ ही श्री साईबाबा का लॉकेट भी उसे पहना दिया। यह घटना जून 2009 की है।

श्री साई बाबा का चमत्कार हुआ और उनकी कृपा से मेरा बेटा बिल्कुल ठीक हो गया। बाबा से यही प्रार्थना है कि आप अपनी कृपा बस इसी तरह बनाये रखना। ओम साई राम। **-डॉ. नीरज कुमार**

साई की उदि का चमत्कार

जय साई राम। मेरा नाम अजीत कुमार मंडल है, मैं योगेश शर्मा, जो एक साई भक्त हैं, उनके पास उनकी जीन्स पैंट की होल सेल की दुकान पर काम करता हूं। योगेश भाई साहब को साई भक्ति करते देखकर मैं और मेरा साथी शंकर हम दोनों भी साई की भक्ति करने लगे। योगेश भाई साहब हमें भी बाबा के चमत्कारों के सम्बन्ध में काफी बातें बताते हैं और सुबह दुकान पर पूजा करने के बाद और शाम को दुकान बन्द करते समय वो हमारे मस्तक पर साई की उदि का तिलक लगाते हैं तथा उन्होंने हमें इस उदि का महत्व भी बताया। यह सब सुन कर हम बाबा पर और ज्यादा विश्वास करने लगे।

पिछले साल, दिसम्बर 2023 में अपने गांव जाते समय मैं योगेश भाई साहब से शिरडी से लाई बाबा की उदि का एक पैकेट अपने घर ले गया। गांव में एक दिन मेरे भतीजे कुलदीप, जो दो साल का है, उसकी तबियत बहुत खराब हो गई, उसे बुखार हो गया और तेज़ बुखार में उसे बेहोशी आ गई और उसकी आंखें ऊपर को चढ़ गई। हम सब बहुत घबराकर उसे अस्पताल ले जाने लगे, पर मुझे एकदम से साई बाबा का ध्यान आया और मैंने वो उदि का पैकेट खोल कर बाबा का नाम जपते हुए उदि उसके माथे पर लगा दी तथा कुछ उसके मुंह में डाल दी। चंद मिनट में ही वो होश में आ गया और बिल्कुल ठीक हो गया और उसका बुखार भी उतर गया। हमें अस्पताल जाना ही नहीं पड़ा। सभी परिजनों ने बाबा का हाथ जोड़ कर जयकारा लगाया। धन्य हैं मेरे साई।

-अजीत कुमार मंडल

जन्मदिन मुबारक

30 जून को लवयांश सतीजा के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर उनके दादू, मम्मी, पापा व बहन की तरफ से हार्दिक शुभकामनाऐं।

बधाई हो बधाई

दिनांक 16 जून को श्रीमति कल्पना पनके एवं श्री रविन्द्र पनके को उनकी शादी की सालगिरह की शुभकामनाऐं।

बाबा की मानो

हम सब अपने आप को बाबा का भक्त कहते हैं लेकिन जो दरअसल बाबा के भक्त हैं और बाबा को मानते हैं, वो बाबा की भी मानते हैं यानि बाबा के बताए रास्ते पर चलते हैं। बाबा को मानना और बाबा की मानना दो अलग-अलग चीज़ें हैं। मैं आपको एक किस्सा बताने जा रही हूं जो मेरे साथ हाल ही में हुआ है। मैं बाबा के भजन गाती हूं। एक बार मुझे गुड़गांव में किसी सिख परिवार ने बाबा के गुणगान के लिए बुलाया। मैं उनको पहले से नहीं जानती थी। उनको मेरे बारे में किसी मित्र के द्वारा पता चला जिनके घर में मैंने एक दो बार भजन संध्या की थी। मैंने सुबह 10 बजे उनके घर जाने के लिए एक कैब बुक कराई। मेरे साथ एक और व्यक्ति भी था। मैं कैब में पीछे बैठ गई और आगे ड्राइवर के साथ वो व्यक्ति बैठ गया जो मेरे साथ जा रहा था। ड्राइवर के साथ बातचीत के दौरान ड्राइवर ने बताया कि कल किसी के घर में सुबह से रात तक उसकी ड्यूटी थी, वो सारा दिन उनके मेहमानों को इधर से उधर छोड़ता रहा लेकिन उन्होंने पूरे दिन उसे कुछ भी खाने पीने को नहीं दिया। सुबह 6 बजे जब वो वापस अपने घर जा रहा था तभी उसके मालिक का फोन आया और उसने कहा कि तुम्हें एयरपोर्ट से सवारी लेने जाना है। तब वो उन्हें लेने एयरपोर्ट चला गया और सुबह 10 बजे से हमारी बुकिंग थी इसलिए वो हमारे पास आ गया। तो इस बीच उसे खाने का समय ही नहीं मिल पाया। उसकी बात सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ और उससे बहुत सहानुभूति हुई। उसने मुझे कहा कि आपको छोड़ने के बाद मैं पास के बाजार में जाकर खाना खाऊंगा और फिर आपको वापस ले जाने के लिए आपके पास पहुंच जाऊंगा। मैंने उससे कहा कि हम जिसके घर जा रहे हैं उसके बारे में मुझे पता नहीं कि वो कैसे लोग हैं, अगर मुझे वो लोग ठीक लगे तो मैं तुम्हारे लिए वहां खाने का प्रबन्ध करवा दूंगी। उनके घर पहुंचने पर उन्होंने हमारा बहुत अच्छे से स्वागत किया और अच्छी खातिरदारी की। उनका अच्छा स्वभाव देखकर मैंने उनसे कहा कि आपके घर में खाना बना है? तब उस महिला ने कहा कि हां बना है। तब मैंने उस ड्राइवर के बारे में उन्हें बताया और उन्हें कुछ खाना उस ड्राइवर को देने को कहा तो महिला ने कहा कि खाना बन तो गया है लेकिन अभी बाबा को भोग नहीं लगाया क्योंकि हमारे घर में बाबा की कोई फोटो नहीं है, मेरी सहेली अभी बाबा की फोटो लेकर आने वाली है, वो आएगी तो बाबा को भोग लगाऐंगे, उसके बाद ही ड्राइवर को खाना दे सकते हैं। तभी उनका 24 वर्षीय बेटा बोला मम्मी ड्राइवर को भूख लगी है तो हम पहले एक थाली में बाबा का भोग निकाल लेते हैं और फिर उस ड्राइवर को खाना खिला देते हैं। उन्होंने वैसे ही किया और बाबा का भोग निकालने के बाद उन्होंने बड़े प्यार से उस ड्राइवर को भरपेट भोजन करवाया। यह देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। तब मुझे लगा कि लोग बाबा को तो मानते हैं पर बहुत कम लोग होते हैं जो बाबा की भी मानते हैं। बाद में उन्होंने मुझे बताया कि उनका बेटा बहुत बीमार था और 15 दिन ~~ में रहा। इसी दौरान पता नहीं कैसे उनके बेटे को बाबा से लगाव हो गया और ठीक होने के बाद वो हमेशा बाबा का ही गुणगान करता रहता है। हमने सोचा कि जब बेटे की बाबा में इतनी श्रद्धा है तो हम बाबा के भजनों का कार्यक्रम अपने घर में करवाते हैं। तब उनकी एक सहेली ने उन्हें मेरे बारे में बताया। उन्होंने बताया कि उन्हें बाबा के बारे में ज्यादा नहीं मालूम है। पर उनके बेटे की बाबा में बहुत श्रद्धा है और बाबा की ही कृपा से आज वो ठीक ठाक है। सारी बात सुनने के बाद मुझे लगा कि क्या पता ड्राइवर के रूप में बाबा ही उनके घर प्रसाद ग्रहण करने आए हों। मेरा मानना है कि हमें बाबा की कही बातों का अनुसरण करना चाहिए जिससे दूसरों का भला भी होगा और हमें भी मन की शांति मिलेगी।

-शीला शर्मा, हैदराबाद

श्री साई सुमिरन टाइम्स
की सदस्यता एवं विज्ञापन
के लिए सम्पर्क करें
Ph: 9818023070
9212395615
saisumirantimes@gmail.com

श्री साई सुमिरन टाइम्स

की सदस्यता लेने के लिए जानकारी

भारत में वार्षिक मूल्य डाक द्वारा 500 रू. व कोरियर द्वारा 700 रू.
आजीवन सदस्यता 11000 रू., विदेशों में वार्षिक मूल्य 2500 रू.

आप अपना सदस्यता शुल्क **Paytm, M.O.** या **QR Code** द्वारा या श्री साई सुमिरन टाइम्स के **HDFC** बैंक, खाता संख्या **01292000015826**, **IFSC: HDFC0000129** में **Net banking** या चैक से जमा कर सकते हैं। अथवा **State Bank of India**, खाता संख्या **35247638760, IFSC: SBIN0017413** में जमा कर सकते हैं। **Ch/DD in F/o Shri Sai Sumiran Times.** कृपया राशि जमा करने की सूचना अवश्य दें। आप अपना पता व फोन न. हमें **email/whatsapp/sms** या डाक द्वारा भेज सकते हैं। हमारा पता है: श्री साई सुमिरन टाइम्स, **F-44-D, MIG Flats,**
Hari Kunj Society, Hari Nagar, New Delhi - 110064.
Mob: 9212395615, 9818023070,
Email: saisumirantimes@gmail.com
नोट: इसमें विज्ञापन देने के लिए भी सम्पर्क कर सकते हैं।

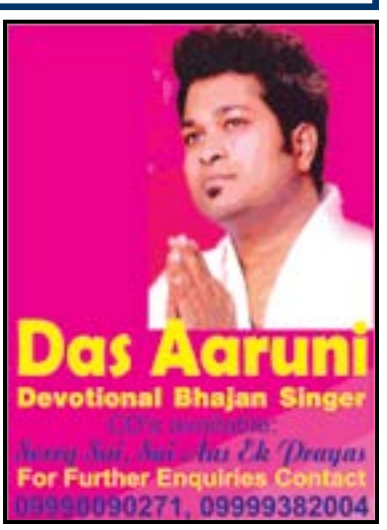

मैं हूं ना

मेरा नाम विमल खत्री है और मैं दिल्ली में रहती हूं। मेरा मानना है कि बुरे वक्त पर कोई आये या न आये लेकिन बाबा अपने भक्तों को संभालने ज़रूर आते हैं। ऐसी एक घटना मैं आप सबको बताना चाहती हूं।

सन् 2012 में हम लोग ऋषिकेश गये थे। वहां हम गंगा में स्नान करने गए। स्नान करते वक्त अचानक मेरे पति का पैर फिसल गया और वो गंगा में बह गये। हम सभी लोग बहुत परेशान हो गये। बहुत ढूंढने पर भी वो नहीं मिले। चार दिन बाद हमें उनका शव मिला। मुझ पर जैसे दुखों का पहाड़ गिर पड़ा। इसके बाद मेरी तबीयत खराब रहने लगी और मैं डिप्रेशन में चली गई। करीब दो महीने बाद मुझे एक बार रात को बाबा के सपने में दर्शन हुए और बाबा को देखते ही मैंने तुरन्त बाबा के चरण छू लिए। उन्होंने काली अंगूठे वाली चप्पल पहनी हुई थी। उन्होंने मुझे उठाया और गले से लगा लिया। उसके बाद सुबह जब मेरी नींद खुली तो मैं बहुत अच्छा और शान्त महसूस कर रही थी जैसे कुछ हुआ ही नहीं हो। मेरा डिप्रेशन भी खत्म हो गया और सब कुछ नार्मल हो गया।

बाबा की कृपा का एक और चमत्कार मैं बताना चाहती हूं। एक बार मेरे कान से पानी निकल रहा था जिसकी वजह से मुझे तकलीफ हो रही थी। मैंने बहुत इलाज करवाया लेकिन उसके बाद भी कान से पानी आना बंद नहीं हो रहा था। मैं बहुत परेशान थी। तब मेरे मन में विचार आया कि मुझे बाबा के मंदिर जाकर आरती में शामिल होना चाहिए। मैं वीरवार को मंदिर गई और बाबा की आरती में शामिल हुई। उसके बाद बाबा की कृपा से मेरा कान अपने आप ही ठीक हो गया। जब-जब मैं तकलीफ में होती हूं तब बाबा किसी न किसी रूप में आकर मेरी मदद करते हैं जिससे बाबा में मेरा यकीन बढ़ता ही जाता है। बाबा से यही दुआ है कि हम पर अपनी कृपा दृष्टी ऐसे ही बनाए रखें। ओम साई राम। -**बिमल खत्री**, दिल्ली

आई करने सेवा मिला हाथों-हाथ मेवा

मेरा नाम गुलनाज़ है। मैं दिल्ली रानी गार्डन की निवासी हूं और आज मैं आपको इस पत्रिका के ज़रिए यह बताने जा रही हूँ कि यदि आपके मन में साई बाबा के प्रति सच्ची आस्था है तो साई बाबा की रहमत कितनी जल्दी असर करती है। मैं घर-घर सफाई, बर्तन, धुलाई इत्यादि का काम करती हूं क्योंकि मेरे पति मुझे छोड़कर चले गए हैं और मेरे तीन बच्चे हैं जिनके पालन पोषण के लिए मुझे यह काम करना पड़ता है। एक रोज़ मैं गीता कालोनी 5 ब्लॉक की एक गली से गुज़र रही थी कि घर के बाहर बैठी एक महिला ने मुझे अपने पास बुलाया और कहा कि क्या आप थोड़े से बर्तन सफाई कर दोगी क्योंकि आज हमारा सेवादार छुट्टी पर है।

मैंने अपनी सहमति दी और जब मैंने घर के अंदर कदम रखा तो वह घर नहीं मानो शिरडी ही प्रतीत हो रहा था, क्योंकि वहां एक कमरे में साई बाबा जी की छोटी बड़ी मूर्तियां व फोटो लगी हुई थी और एक चादर के आसन पर उस घर के मालिक बैठे हुए थे जिनके बारे में पूछने पर ज्ञात हुआ कि इनको लोग गुरुजी कहते व मानते हैं और ये यहां कई वर्षों से लोगों के कष्टों के निवारण हेतु बैठे हुए हैं, जिनको यह प्रेरणा साई द्वारा उनकी कृपा से मिली है जिसे वह निस्वार्थ सेवा भाव से निभाते आ रहे हैं। उनको जानकर मुझे खुशी हुई और अपने बारे में पूछने की भी जिज्ञासा हुई क्योंकि मेरा जीवन भी अपनी शारीरिक बीमारियों के कारण व पति के छोड़कर चले जाने के बाद बहुत ही कष्टदायक हो चुका था। मैंने बर्तन की सफाई करते-करते उन महिला से पूछा कि यह कौन हैं और क्या करते हैं? तो उन्होंने बताया कि वो मेरे पति हैं और पिछले करीब 25 साल पहले इन पर साई की असीम कृपा हुई और उनके द्वारा लोगों के कष्ट का निवारण करने की इन्हें प्रेरणा मिली। उनकी बात सुनकर मैंने उनको कहा कि मैं भी अनेकों कष्टों में घिरी हुई हूं, मेरे शरीर में भी अनेकों बीमारियों ने घर कर रखा है, क्या मैं भी कुछ पूछ सकती हूं। तो उन्होंने कहा हाँ आप पूछ सकते हैं। फिर मैंने बर्तन की सेवा की, पैसे लिए और गुरु जी के पास जाकर उनको अपनी सारी समस्या बताई तो गुरुजी ने मेरे सिर पर हाथ रखकर आंखें बंद की और कुछ देर बाद मेरे सिर से हाथ हटाया, फूंक मारी और अपने पास से एक पानी की बोतल में कुछ फूंक मार कर मुझे दे दी और उस जल से मुझे हर रोज़ नहाने व पीने में सेवन करने को कहा। आप मेरा यकीन मानना जिस वक्त मैं गुरुजी के पास बैठी थी उस वक्त मेरे पेट में बड़ा भयंकर दर्द हो रहा था और जब उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखा और कुछ देर बाद हाथ हटाकर फूंक मारी, तो मेरे पेट का दर्द उसी वक्त खत्म हो गया और उस दिन के बाद फिर कभी नहीं हुआ। इसी विश्वास को लेकर मैं उनके द्वारा दिए हुए जल का हर रोज़ सेवन करती हूं और उनके दरबार में भी हर रोज़ माथा टेकने जाती हूं। ऐसे गरीबों के मसीहा को मेरा शत्-शत् नमन। ओम साई राम। **-गुलनाज़**

जन्मदिन मुबारक

प्रेरक ने अपने छोटे भाई प्रेरित का पहला जन्म दिन बाबा के साथ मनाया। प्रेरक ने साई बाबा मंदिर, सरोजनी नगर, को गुब्बारों से सजाया। श्री साई सुमिरन टाइम्स की तरफ से हम दुआ करते हैं कि प्रेरक व प्रेरित के जीवन में खुशियों के फूल सदा महकते रहें।

जन्मदिन मुबारक

2 जून सुधान्शु जी

8 जून राजेन्द्र शर्मा

10 जून राजू सचदेवा

11 जून नवनीत अग्निहोत्री

11 जून महेन्द्र दादू

15 जून शरणजीत कौर

17 जून सुमित पोंदा

18 जून रविन्द्र पनके

19 जून सुनील नागपाल

21 जून सचिन ताम्बे

24 जून प्रीति भाटिया

29 जून के.सी. गुप्ता

शादी की सालगिरह मुबारक

2 जून बबलु दुग्गल एवं मीनू दुग्गल

9 जून प्रिंस मदान एवं शिल्पी मदान

16 जून प्रथमेश गुप्ता एवं कमलेश गुप्ता

19 जून हरी प्रकाश अग्रवाल एवं अनीता देवी

24 जून आर.के. सक्सैना एवं हिमाचल सक्सैना

जन्मदिन मुबारक

12 जून को आयरा महाजन के जन्मदिवस के शुभ अवसर पर श्री साई सुमिरन टाईम्स की तरफ से हार्दिक शुभकामनाऐं।

बाबा ने दुकान एवं मकान दिलवाया

मेरा नाम बलराम गुप्ता है। मैं बक्सर, बिहार का रहने वाला हूं। बाबा के चरणों से मैं पिछले 23 सालों से जुड़ा हूं। मेरा ये मानना है कि मोह माया की इस दुनिया में यदि प्रभु कीर्तन, सद्ग्रंथों का पठन, अध्ययन एवं श्रवण किया जाए तो ऐसा करना मानव जीवन के लिए बेहद लाभदायी एवं श्रेयस्कर साबित होगा। कलयुग में प्रभु का भजन, कीर्तन, सद्ग्रंथों का पठन एवं श्रवण करने से मन के अंदर के दुर्विचार दूर हो जाते हैं। आप लाख प्रयास कर लो पर समय से पहले और भाग्य से ज़्यादा आपको कुछ नहीं मिलने वाला। बाबा को अपने भक्तों के बारे में सब कुछ ज्ञात है। हम लाख जतन और उपाय कर लें पर 'होत वही जो साई रची राखा।' ये बात तब की है जब मेरी पोस्टिंग नासिक के ओझर नामक कस्बे में हुई थी। अक्टूबर 2007 की बात है, इससे पहले मैं ठाणे, मुंबई में पोस्टिंग पर था। वहां जब भी समय मिलता हम लोग ठाणे के वर्तक नगर साई मंदिर में बाबा का आशीर्वाद लेने जाते थे। मैं अक्सर अपनी पत्नी, मां तथा बच्चों के साथ बाबा के दर्शन करने वीरवार के दिन जाता था और गुलाब का फूल बाबा को ज़रूर भेंट करता था। तब मेरी मासिक आय बहुत कम थी। ओझर, नासिक में पोस्टिंग आने पर हम लोग बहुत प्रसन्न थे इसलिए कि यहां से शिरडी मात्र 100 किलोमीटर दूर था और अब बाबा का दर्शन करना आसान हो जाएगा। उस समय हम लोग बाबा के उतना करीब नहीं थे जितना अब महसूस करते हैं। ओझर, नासिक आने से पहले हमारे पास हमारे नाम का कोई घर, मकान, प्लॉट या दुकान नहीं था। ना ही मेरी कोई ऐसी ख्वाइश थी। बक्सर, बिहार में एक पैतृक मकान एवं दुकान है।

नासिक में हम लोग धीरे-धीरे सैटल हो रहे थे। एक दिन मेरी पैट्रोलिंग ड्यूटी लगी थी। ड्यूटी करने के बाद पैट्रोलिंग पोस्ट से कुछ ही दूरी पर मैंने देखा कि एक बहुत ही बढ़िया मंदिर था जिसका नाम प्रभु धाम मंदिर था और ठीक उसी के पीछे गुजरात के कुछ बिल्डर, अपार्टमेंट एवं रो-हाऊस बंगलों का निर्माण करवा रहे थे। उत्सुकतावश पूछने पर पता चला कि अभी नया निर्माण शुरू हुआ है और बुकिंग चल रही है। तब मुझे प्लॉट और प्रॉपर्टी खरीदने के बारे में कुछ भी ज्ञान नहीं था क्योंकि तब मेरी मासिक आय बहुत कम थी। बस ठीक-ठाक से परिवार का गुज़र बसर हो जाता था। अत: प्लॉट या घर खरीदना मेरे लिए एक कोरी कल्पना जैसा था। मैंने अपनी पत्नी को बताया कि प्रभु धाम मंदिर के पास, जो एकदम टप्च एरिया है, वहां नये घर का बुकिंग चालू है। फिर क्या था आनन फानन में हम लोगों ने एक रो-हॉउस बंगला बुक कर दिया। तब मेरे पास बुकिंग अमाउंट के बयाने के लिए 5000 रूपये भी नहीं थे। परंतु जैसे तैसे 151000/- रूपये का बंदोबस्त करके बयाना दे दिया गया। अकसर लोग घर खरीदने से पहले चार जगह पूछते हैं, रिश्तेदारों, वकील एवं दोस्तों से सलाह लेते हैं। इंटरनेट पर प्रॉपर्टी डिटेल चेक करते हैं। परंतु हमने ऐसा कुछ भी नहीं किया। हमने तो घर ऐसे खरीदा मानो मार्किट में गया और अचानक कुछ पसंद आ गया 100 या 200 की वस्तु और बस खरीद लिया। खैर, साई बाबा के आशीर्वाद से बुकिंग के छ: महीने बाद हमें पोज़ेशन भी मिल गया। जुलाई 2008 में गृह प्रवेश भी हो गया और हम लोग नये घर में शिफ्ट कर गए।

गृहप्रवेश के ठीक अगले दिन मैं अपने सभी मेहमानों रिश्तेदारों को लेकर शिरडी बाबा के दर्शन करने गया। अब बस रोचक एवं हैरान करने वाली बात ये है कि घर की बुकिंग करने से पहले न तो मैंने बिल्डर्स से कन्सट्रक्शन कम्पनी का नाम पूछा था और ना ही मुझे ये पता था कि सोसाइटी का नाम क्या है? न तो वहां कोई साईनबोर्ड या फिर advertisement लगा था। मेरे पास प्रॉपर्टी खरीदने का बिल्कुल अनुभव भी नहीं था। परन्तु आप सभी पाठकों को ये जानकर बेहद हैरानी होगी की प्रॉपर्टी की रजिस्ट्री से कुछ ही महीने पहले जब रजिस्ट्रेशन के लिए पेपर रेडी होने लगे तो पता चला की कन्सट्रक्शन कम्पनी का नाम साई राम कन्सट्रक्शन है एवं मेरे रॉ हॉउस के सोसाइटी का नाम श्रद्धा सबूरी रॉ हॉउस है। घर लेने के एक साल बाद एक दुकान की भी बगल के अपार्टमेंट में मैंने रजिस्ट्री करा ली। अब साई की इस लीला को क्या कहें? चमत्कार या इत्तफाक ये तो हमारे बाबा ही जानें। हमारी ऐसी इच्छा है कि नौकरी के बाद हम लोग श्रद्धा सबूरी अपार्टमेंट में ही परमानैंट सैटल हो जाऐं। अब ये निर्णय हमरे बाबा के ऊपर ही छोड़ दिया। ऊँ साई राम। **-बलराम गुप्ता**, बिहार

सुप्रसिद्ध भजन गायक श्री परवीन मलिक जी की नई एलबम 'साई सानू ना भुलाई' का विमोचन शिरडी में 20 जून को किया जाएगा।

शरणागत भजन ग्रुप के बैनर तले बनी इस एलबम के भजनों के संगीतकार बाबू जान एवं गीतकार सुभाष आहूजा हैं। 'साई सानू ना भुलाई' एलबम के सभी भजन अति कर्णप्रिय हैं। जिन्हें सुनने के बाद मन में बाबा के प्रति भक्ति जागृत होती है। परवीन मलिक जी की पहले भी कई भजन लोकप्रिय हुए हैं।

इस एलबम को प्राप्त करने के लिए परवीन मलिक जी से फोन 9818859919 या 8700638129 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

सुरेश चन्द गुप्ता जी के 100वें जन्मदिन पर श्रद्धांजलि

दिनांक 17 मई 2024 को बाबा के परम भक्त स्वर्गीय श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता जी के 100वें जन्मदिवस पर उनकी बेटी रेखा मित्तल एवं श्री सुरेश मित्तल एवं उनके समस्त परिवार द्वारा उनकी याद में चिन्मय मिशन, लोधी रोड में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उनके बहुत से मित्रगण, रिश्तेदार एवं साई भक्त इस कार्यक्रम में शामिल हुए। शाम 5:30 बजे कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। सर्वप्रथम श्रीमति रेखा मित्तल ने वहां उपस्थित सभी लोगों को स्व. श्री सुरेश गुप्ता जी की

जीवनी के बारे में अवगत करवाया। उसके बाद श्री अविरल माथुर जी ने अपनी मधुर वाणी में भजनों का गुणगान किया। उनके भजनों ने सबका मन मोह लिया। भजनों के अंत में उन्होंने श्री गुप्ता जी द्वारा लिखे दोहों का भी गुणगान किया। श्रीमती निलाम्बरी चिन्तामणि व श्री अशोक खुराना ने भी भजन सुनाकर उन्हें श्रद्धाजली दी। भजनों के पश्चात् वहां उपस्थित कई भक्तों ने श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता जी को श्रद्धांजली अर्पित करते हुए उनके बारे में कई किस्से सुनाए। श्री मोती लाल गुप्ता जी, श्री विजय राघवन जी, श्रीमती राघवन, श्री केवल कृष्ण गाखड़ जी, सौरभ खन्ना ने भी उनके साथ बिताए पलों के बारे में बताते हुए श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता जी के साई समाज में दिए गये योगदान की सराहना की। उनके नाती श्री प्रतीक मित्तल व जूही मित्तल ने भी अपने नानाजी को याद करते हुए उनके साथ बिताए हुए पलों के बारे में और उनकी दी हुई शिक्षा के बारे में बताया। इस अवसर पर स्वामी रामदास जी, डॉ. अनुराधा, श्री एस.के. घई व अन्य कई गणमान्य व्यक्ति कार्यक्रम में शामिल हुए।

एक पिता को समर्पित इस कार्यक्रम का आयोजन करने के लिए सभी ने रेखा मित्तल और उनके पति सुरेश मित्तल की तारीफ करते हुए कहा कि आज के समय में इतने संस्कारी बच्चे मिलना बाबा की कृपा से ही संभव है। कार्यक्रम के पश्चात् सभी ने स्वादिष्ट व्यंजनों का आनन्द लिया।

श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता जी का जन्म 17 मई 1924 को हुआ था और 16 अक्टूबर 2011 को वो बाबा के चरणों में विलीन हो गये। उनका सारा जीवन बाबा को समर्पित रहा। श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता जी साई भक्ता समाज समिति के सदस्य थे जिन्होंने उत्तर भारत के सबसे पहले साई बाबा मंदिर का निर्माण लोधी रोड में करवाया। साई बाबा मंदिर को बनवाने में उनका बहुत योगदान रहा। साई भक्तों में उनका नाम एक जाना माना नाम है। उन्होंने साई बाबा पर 4 किताबें भी लिखी हैं। सभी साई भक्त उनके इस योगदान के लिए सदा उनके आभारी रहेंगे।

-पूनम धवन

साई मंदिर आदर्श नगर में 25वें स्थापना दिवस पर आमंत्रण

दिल्ली: दिनांक 20 जून 2024 को शिरडी साई बाबा मंदिर, एफ-1, अशोक रोड, आदर्श नगर एक्सटेंशन में मंदिर के 25वें स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर साई भजन संध्या का आयोजन किया जाएगा। शाम 6 बजे से भजनों का गुणगान सुप्रसिद्ध भजन गायक के.के. अन्जाना, बूम बूम सैंडी और बबिता शर्मा द्वारा किया जाएगा। साई सजदा आर्ट ग्रुप द्वारा साई की लीलाओं पर नृत्य नाटिका प्रस्तुत की जाएगी। इस अवसर पर सांय: 7:30 बजे बाबा के समक्ष केक काटा जाएगा। तत्पश्चात् सभी के लिए भंडारे का आयोजन किया जाएगा।

आप सभी भक्तों से निवेदन है कि आप सभी इस कार्यक्रम में शामिल होकर बाबा का आशीर्वाद प्राप्त करें। कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के संस्थापक एवं चेयरमैन श्री बी.पी. मखीजा जी के मार्ग दर्शन में किया जाएगा।

-कृष्णा पुरी

अरोड़ा परिवार द्वारा साई भजन संध्या

दिल्ली: दिनांक 18 मई 2024 को श्री ओ.पी. अरोड़ा व श्रीमती अनामिका अरोड़ा द्व ारा उनके निवास स्थान विकास पुरी में भव्य साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। विशाल सुसज्जित पंडाल में बाबा का सुन्दर दरबार सजाया गया। इस अवसर पर भजनों का गुणगान साई शरणागत ग्रुप के सुप्रसिद्ध गायक परवीन मलिक व गायिका शिल्पी मदान द्वारा किया गया। उन्होंने कई मनमोहक भजन सुनाकर समां बांध दिया। कई भक्तों ने अपने मनपसंद भजनों की फरमाईशें भी की जिसे उन्होंने सहजता से पूरा किया। कई भजनों पर भक्तों ने खूब नृत्य भी किया। भजनों के दौरान सभी ने स्वादिष्ट व्यंजनों का भी आनन्द लिया। अंत में पंडाल में बाबा की पालकी निकाली गई। तत्पश्चात् सबने मिलकर बाबा की आरती की। उसके बाद सभी भक्तों ने स्वादिष्ट लंगर प्रसाद का आनन्द लिया। श्री ओ.पी. अरोड़ा जी ने सभी भक्तों को बाबा का प्रसाद और बाबा का स्वरूप एवं चरण देकर सबको विदा किया।

-जी.आर. नंदा

राकेश जुनेजा द्वारा भक्तिमय भजन संध्या

दिनांक 19 मई 2024 को बाबा के परम भक्त श्री राकेश जुनेजा जी द्वारा गुड़गांव के सहारा क्लब के लॉन में विशाल साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। राकेश जी ने इस कार्यक्रम

का आयोजन अमेरिका से आए उनके बेटे मोहित, बहु सुरभि एवं सुपुत्री पारूल व दामाद नितिश को बाबा का आशीर्वाद दिलवाने हेतु किया। सर्वप्रथम उनके निवास स्थान में स्थित साई मंदिर में पारूल एवं नितिश द्वारा पूजा अर्चना की गई। तत्पश्चात् सहारा क्लब लॉन में साई भजनों का गुणगान सुप्रसिद्ध गायक परवीन मुदगल जी एवं श्री ब्रिज मोहन नागर जी द्वारा किया गया। परवीन जी व गुरू जी ने अपने चिरपरिचित अंदाज़ में एक के बाद एक मधुर भजन सुनाकर समां बांध दिया। उन्होंने भक्तों की फरमाईशें पूरी करते हुए अनेक भजन सुनाकर सबका मन मोह लिया। इस अवसर पर उनकी नयी रचना "Shri Sai Gyaneshwari A Pictorial Album" का विमोचन श्री मोती लाल गुप्ता जी, श्री सुरेन्द्र घई, श्री विजय राघवन, श्री भीम आनंद, साई रतन राजेश, श्री राकेश जुनेजा, सुश्री अंजु टंडन एवं श्रीमती इंदु खुराना द्वारा किया गया। स्टर्लिंग पब्लिशर्स द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में साई रतन राजेश जी ने अति सुंदर चित्रकारी की है। राकेश जी ने ये पुस्तक विशेषकर बच्चों के लिए बनायी है ताकि वो चित्रों के माध्यम से बाबा के बारे में जानकारी प्राप्त करें और अपनी संस्कृति और धर्म के बारे में जानें।

सभी भक्तों ने भजनों के साथ-साथ स्वादिष्ट व्यंजनों का भी आनन्द लिया। आरती के बाद राकेश जुनेजा जी ने सभी भक्तों को फल, मिठाई प्रसाद एवं "Shri Sai Gyaneshwari A Pictorial Album" पुस्तक उपहार स्वरूप देकर विदा किया।

-भीम आनंद

देव नगर मंदिर में श्री साई सच्चरित्र पारायण एवं भजन

दिल्ली: दिनांक 25 मई 2024 को प्राचीन साई धाम मंदिर, देव नगर, करोल बाग में प्रति माह किया जाने वाला श्री साई सच्चरित्र का पाठ मंदिर की महिला मण्डल की सदस्यों द्वारा किया गया। सबने श्रद्धापूर्वक पारायण किया। ग्रन्थ पारायण के पश्चात् भक्तों द्वारा भजनों का गुणगान किया गया, जिसका सबने खूब आनंद लिया। मंदिर में प्रत्येक वीरवार को साई बावनी और साई ज्ञानेश्वरी का पाठ भी धूप-आरती से पहले साई भक्तों द्वारा किया जाता है, जिसमें बड़ी संख्या में भक्त शामिल होते हैं और बाबा का आशीर्वाद भी लेते हैं। बाबा सब पर अपना आशीर्वाद और कृपा दृष्टि बनाये रखें।

-मंजु पालीवाल

साई मंदिर हरिद्वार में स्थापना दिवस पर भक्तों का मेला

हरिद्वार: दिनांक 3, 4 व 5 मई 2024 को हरिद्वार में साई बाबा मंदिर, भूपतवाला का 31वां स्थापना दिवस समारोह अत्यन्त धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ 3 मई को बाबा की काकड़ आरती से हुआ। उसके बाद बाबा को मंगलस्नान करवाया गया। सांय 4 बजे श्री साई सच्चरित्र का पारायण भक्तों द्वारा किया गया। तत्पश्चात् साई भजनों का गुणगान किया गया।

दिनांक 4 मई को आरती एवं मंगलस्नान के पश्चात् मंदिर की ट्रस्टी एवं बाबा की परम भक्त श्रीमती सुमन मल्होत्रा जी द्वारा साई नाम जाप श्रद्धापूर्वक किया गया, जिसमें बहुत से भक्त शामिल हुए। सबको लड्डू प्रसाद बांटा गया। प्रातः 10:00 बजे मंदिर में सत्यनारायण कथा का आयोजन किया। पंडित लवली जी ने सभी भक्तों को सत्यनारायण भगवान की कथा सुनाई। बहुत से भक्तों ने इस कथा में शामिल होकर विष्णु भगवान का आशीर्वाद प्राप्त किया। दोपहर 2 बजे बैंड-बाजे, ढोल, नगाड़ों के साथ भव्य पालकी शोभायात्रा निकाली गई। हर की पौड़ी पर सभी भक्तों ने बाबा को गंगाजल से स्नान करवाया। जगह-जगह पर पालकी का स्वागत किया गया। नगर भ्रमण के बाद पालकी शाम 6 बजे मंदिर में पहुंची। सांय आरती के बाद सक्सैना बंधु श्री अमित सक्सैना, श्री मुकेश सक्सैना व श्री सुरेन्द्र सक्सैना ने भजनों की अमृतवर्षा की। भजनों के दौरान वहां पर आए सभी गणमान्य अतिथियों का सम्मान मंदिर के ट्रस्टियों द्वारा किया गया व अन्य कई साई भक्तों व साई संस्थाओं को बाबा का स्मृतिचिन्ह देकर सम्मानित किया गया। तीनों दिन बाबा का भंडारा दिनभर चलता रहा। साई असी नौकर तेरे संस्था देवनगर, करोलबाग के सेवादारों का कार्यक्रम के संचालन में तीनों दिन भरपूर सहयोग रहा।

दिनांक 5 मई को काकड़ आरती के पश्चात् 108 गंगाजल के कलश से बाबा का मंगलस्नान शुरू हुआ। उसके उपरांत 1008 लीटर दूध से वहां आए सभी भक्तों द्वारा बाबा को मंगलस्नान कराया गया। बाबा को अपने हाथों से स्नान करके भक्तगण धन्य हो गये। बाबा को छप्पन भोग का प्रसाद भी अर्पित किया गया। बाबा के स्नान के दौरान भजनों की गंगा अविरल बहती रही। उत्तराखण्ड के गायक श्री अरविन्द व सक्सैना बंधुओं ने भजनों की मधुर प्रस्तुति दी।

इस मंदिर की स्थापना -शेष पृष्ठ 8 पर

शिव साई मंदिर नोयडा में श्री साई बाबा मूर्ति का स्थापना दिवस

नोयडा: दिनांक 26 मई 2024 को शिव साई मंदिर सैक्टर-18, नोयडा में स्व. श्री वी.बी. बख्शी जी द्वारा स्थापित श्री साई बाबा की मूर्ति का 27वां स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। प्रातः 7: बजे साई बाबा का मंगल स्नान करवाया गया। उसके पश्चात् बाबा का अभिषेक, श्रृंगार व पूजा अर्चना की गई। प्रातः 8:30 बजे आरती की गई तत्पश्चात् सभी भक्तों को प्रसाद वितरण किया गया।

सांय 7 बजे से साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। जिसमें सुप्रसिद्ध भजन गायिका नीतू कुमार एवं श्री सूरज कुमार ने बाबा की लीलाओं का गुणगान किया। नीतू जी व सूरज जी ने अपने-अपने अंदाज में अनेक भजन सुनाकर सबको बाबा की भक्ति में सराबोर कर दिया। उनके भजनों पर कई भक्तों ने खूब नृत्य भी किया। कार्यक्रम में आए अतिथियों को श्री गोविन्द बख्शी व श्रीमती वंदना बख्शी ने पटका पहनाकर सम्मानित किया। गर्मी के मौसम को देखते हुए सभी भक्तों को फ्रूट जूस की बोतले वितरित की गई। आरती के बाद सभी के लिए स्वादिष्ट भंडारे प्रसाद का आयोजन किया। सभी भक्तों ने भंडारे का आनन्द लिया।

कार्यक्रम का आयोजन बख्शी परिवार एवं शिरडी साई परिवार के सदस्यों द्वारा बखूबी किया गया।

इस शिव साई मंदिर में 27 वर्ष पूर्व बाबा के परम भक्त श्रद्धेय श्री वी.वी. बक्शी जी ने साई बाबा की मूर्ति स्थापना करवाई। सभी भक्तों ने श्री वी. बी बक्शी जी को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजली अर्पित की।

-अमित मनचंदा

हर्ष पटूना द्वारा पारचा परिवार में साई भजन संध्या

दिल्ली: दिनांक 5 मई 2024 को श्रीमती शोभा एवं श्री ओम प्रकाश पारचा जी के विवाह की 40वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर पारचा परिवार द्वारा उनके निवास स्थान ओम विहार एक्सटेंशन, उत्तम नगर वैस्ट में साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सांय 7 बजे किया गया। बाबा की लीलाओं का गुणगान करने के लिए सुप्रसिद्ध भजन गायक हर्ष साई एंड पार्टी को आमंत्रित किया गया। सर्वप्रथम हर्ष साई जी ने गणेश वंदना से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तत्पश्चात् हर्ष साई जी ने अपने ही अंदाज़ में बाबा की महिमा के अनेक भजन सुनाए। उनके भजनों पर कई भक्तों ने नृत्य भी किया। जिसका भक्तों ने खूब आनन्द लिया। उनके बाद श्री दिनेश दीवान जी ने कुछ भजन सुनाकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। अंत में आरती की गई और सभी ने स्वादिष्ट लंगर प्रसाद ग्रहण किया। **-कृष्णा**

श्रद्धा सबूरी
LEKH RAJ & SONS JEWELLERS
For Exclusive
Gold, Diamond, Kundan, Silver Jewellery
Shop No. 3, B-33, Kalkaji New Delhi-19
Phone 26438272

बाबा के चरणों में
सरगम स्टूडियो
Producer of Films, Radio & TV Serials
E-23-B, Lajpat Nagar-2, New Delhi - 110024 Ph. No. 2981-5747

Anish Tahim
New Prominent Tailors
Specialist in Ladies & Men's Wear
K-25, Opp. Plaza, Connaught Place, New Delhi-110001
Tel.: 23418665, 51513273, 55355016
Mobile: 9810027195

फकीर मेरा दीन-दयाला सब कुछ देता जाए न कुछ मांगे न कुछ बोले कृपा बरसाता जाए

बाबा जब पुन: शिरडी में बारात के साथ आये तो उनका स्वरूप एक 'तरूण फकीर' के रूप में था इसी कारण यह स्वरूप देख भक्त म्हालसापति ने उन्हें 'आओ साई' कह कर सम्बोधित किया। शब्दकोष के अनुसार साई का अर्थ प्रभु, स्वामी, फकीर है। बाबा लगभग साठ वर्ष शिरडी में रहे। सम्पूर्ण ज़िन्दगी उन्होंने फकीरी का आवतार ओढ़े रखा। उनकी कुल पूंजी यह रही- एक चिलम, टमरेल, सटका व लम्बी कफनी। परन्तु साई बाबा जी का एक दिव्य स्वरूप इस तरह था- 'एक अपरिचित, अनंत, सत्य और अपरिवर्तनशील सिद्धांत जिसके अर्न्तगत यह सारा विश्व है- श्री साई बाबा में अविभूत हुआ था। यह अमूल्य निधि केवल सत्वगुण-सम्पन्न और भाग्यशाली भक्तों को ही प्राप्त हुई। जिन्होंने श्री साई को केवल एक फकीर या सामान्य पुरूष समझा, यथार्थ में वे अभागे थे या हैं।

श्री साई बाबा 1858 से 1918 तक शिरडी में रहे। उस अवधि में अनगिनत लोग उनके दर्शनार्थ और कृपा पाने हेतु शिरडी आये। प्राय: सभी मामलों में बाबा ने उन सभी भक्तों की हर इच्छाओं को पूरा किया जो पूर्ण सच्चाई, प्रेम व विश्वास के साथ बाबा की शरण में आए। बाबा प्राय: कहा करते थे- 'मैं अपने भक्तों का दास हूं। इस मस्जिद का फकीर बहुत दयालु है।' अत्यंत असंभव मामलों में भी बाबा ने भक्तों को नवजीवन भी दिया। जिन महिलाओं को संतान नहीं थी, उन्हें पुत्र पुत्रियों का सुख दिया। उदाहरणार्थ- शिन्दे की सात लड़कियां थी, लड़का नहीं था। गंगापुर के प्रसिद्ध दत्तात्रेय मंदिर जाकर उसने पुत्र प्राप्ति हेतु प्रार्थना की। प्रभु कृपा से उसे वर्ष भर में ही पुत्र की प्राप्ति हो गई परन्तु वो प्रभु दत्तात्रेय को धन्यवाद करने हेतु नहीं गये। 6 वर्ष बाद जब वे शिरडी गये तो बाबा क्रोधित होकर बोले, 'क्या तुम इतने धोखेबाज व घमंडी हो गये हो? अरे तुम्हारी किस्मत में पुत्र कहां था? यह तो मैंने इस शरीर को चीरकर तुम्हें पुत्र दिया, तुम्हारी प्रार्थना के जवाब में।' इस लीला से श्री साई बाबा ने अनुभव दिया कि वे स्वयं प्रभु दत्तात्रेय हैं।

साई बाबा का ऐसा अद्‌भुत व्यक्तित्व था कि उनमें अंहकार के लिये कोई जगह नहीं थी अपितु भक्तों के लिये असीम प्रेम था। वे समस्त प्राणियों में ब्रह्म या स्वयं ईश्वर का दर्शन किया करते थे। मित्र व शत्रु को एक नज़र से देखते थे। वे किसी से किसी प्रकार की इच्छा नहीं रखते थे, अपितु सभी से एक जैसा व्यवहार करते थे। कई बार भक्त जब शिरडी नहीं आ पाते, बाबा उन्हें स्वप्न में दर्शन देकर या वेश बदलकर भक्त के कल्याणार्थ हेतु उनके पास जाते। उदाहरणार्थ- एक स्त्री पूणे में रहती थी। विवाह के कई वर्ष पश्चात् भी वो निसंतान थी। दु:खी होकर उसने सोचा अगर बाबा उसे एक नारियल दे दें तो वे अवश्य मां बन सकती है। इस हेतु जब-जब उसने शिरडी जाने का प्रयास किया, कोई न कोई समस्या आ जाती और वो नहीं जा पाती। इससे वह और दु:खी हो जाती। उन्हें फिर भी विश्वास था कि मुझे बाबा से ज़रूर नारियल मिलेगा। एक रात वे भारी मन से सो गई। महान आश्चर्य। उसी रात्रि उनके स्वप्न में आकर बाबा ने उसे एक नारियल दिया। स्वप्न इतना सच्चा था कि वह उठकर नारियल ढूंढने लगी। अरे! नारियल सचमुच ताकिये के पास ही था। हैरान, परन्तु खुशी-खुशी उसने प्रण किया कि बाबा यह नारियल खाने से मुझ पुत्र हुआ तो मैं बालक को लेकर शिरडी आऊंगी और उसे चरणों में डाल दूंगी। धन्य-धन्य श्री साई, उन्हें संतान (पुत्र) की प्राप्ति हुई। दो माह के बालक के साथ वो शिरडी गई और अपना प्रण पूरा किया। (एमब्रोसिया इन शिरडी)

साई संतो में महान हैं। जो पूर्ण समर्पण कर उनके सामने नतमस्तक होता है, वे उस पर अवश्य कृपा करते हैं। आइये एक ऐसी कथा का श्रवण करें जब स्वयं एक फकीर बन उसके पास गये। वे भक्त यथार्थ में अत्यंत भाग्यशाली हैं जिन्होंने आपकी विशेषताओं का अनुभव भी किया है। भक्त श्री हरिभाऊ कार्णिक की पुत्रवधु अंधेरी उपनगर में अर्धविक्षिप्त (आधा पागल) हो गई। सूचना मिलते ही हरिभाऊ ने मुंबई जाने हेतु गाड़ी पकड़ी। जैसे ही गाड़ी पालघर रेलवे स्टेशन पहुंची, उन्होंने अपने पीछे की सीट पर एक फकीर को बैठे देखा। तभी फकीर बोलने लगा कि भगवान ने हमें, प्रकृति ने पेड़-पौधों के रूप में दवाईयां दी हैं, जिनके उपयोग का हमें मालूम नहीं है। परन्तु मैं जानता हूं, तब एक वृक्ष की ओर ईशारा करते हुए बोले, अगर इस वृक्ष की पत्तियों को पीसकर एक

पागल को खिलाई जाये तो मरीज़ ठीक हो जायेगा। हरिभाऊ चिन्ता में थे सो अनमना होते हुए सब कुछ सुना। बांद्रा पहुंचकर जब उन्होंने पुत्रवधु की हालत देखी, उन्हें फकीर की बातें याद आ गई। तुरंत ही इस खास वृक्ष, जिसकी ओर फकीर ने ईशारा किया था, उसके पत्तों का रस निकालकर वधु को दिया। वे ठीक हो गई। दो वर्ष पश्चात् उन्हें पुन: बिमारी ने घेर लिया वो ही इलाज किया तो वे स्वस्थ हो गई। क्या यह बाबा श्री की कृपा नहीं थी? (साभार एब्रोसिया इन शिरडी)

हे साई आपको समझ पाने के प्रयास में, श्रुतियां मौन हो जाती हैं तो हम मूढ़-मानव आपको कैसे समझ सकते हैं।

दैहिक बुद्धि के आवरण से एक मनुष्य ऐसी धारणा बना लेता है कि 'मैं ही कर्त्ता हूं, मैं ही भोक्ता हूं।' परन्तु हमारे साई जो महान अभिनयकर्ता हैं, जो स्वयं ही श्री राम, श्री कृष्ण हैं अपने भक्तों को पूर्ण-आनंद प्रदान कर उन्हें अपनी लीला के रंग में रंग लेते हैं। श्री बहादुर धणा के दामाद श्री जोशी बाबा को बिल्कुल नहीं मानते थे। जबकि उनके परिवारजन व मित्र बाबा श्री के दशनार्थ हेतु जाते रहते थे। एक समय जोशी गुस्से से बोले, अगर बाबा महान संत हैं वे स्वयं मुझे दर्शन दें, बिना शिरडी में जाकर। मैं उनकी महानता मान लूंगा। बाबा ने भी ठान लिया कि इस भक्त को सही राह पर लाना है। एक बार कोकण से आया परिवार जब बाबा से प्रस्थान करने की आज्ञा मांगने आया तो बाबा ने कहा, मेरा एक काम कर देना। 'अवश्य बाबा।' उस परिवार ने जब कहा- बाबा ने उदि का एक पैकेट देते हुए कहा-'मेल गाड़ी से घर जाओ और यह पैकेट उस व्यक्ति को दे देना जो तुमसे बित्ता जैसी जगह अपने लिये बैठने को मांगे।' 'अवश्य उदि दे दूंगा और अगर वह व्यक्ति नहीं मिला तो पत्र द्वारा आपको सूचित कर दूंगा,' परिवार का एक सदस्य बोला। वह सदस्य सारे रास्ते उस व्यक्ति का इंतज़ार करता रहा, पर ऐसा कोई नहीं आया। तभी गाड़ी थाणा (उपनगर) रूकी। गाड़ी भरी हुई थी। जैसे ही थाणा से गाड़ी रवाना हुई, एक व्यक्ति दौड़ता हुआ गाड़ी में चढ़ा। परिवार जन से उसने बित्ता जितनी सीट बैठने को जैसे ही मांगी, सदस्य ने तुरंत ही उदि का पैकेट उसे (श्री जोशी) देते हुए कहा- 'यह साई बाबा जी ने आपके लिये भेजी है। हैरान हो, जोशी ने आदरपूर्वक उदि हाथों में पकड़ ली। मन में उसे आभास हुआ कि सत्य में साई बाबा एक महान संत हैं। भक्तगण-यह सम्पूर्ण सृष्टि जड़ और चेतन, साई से परिपूर्ण है। कोई कहीं भी स्थिर बैठकर इसका स्वयं अनुभव कर सकता है। (एमब्रोसिया इन शिरडी)

साई समर्थ ज्ञान का भंडार हैं। भक्त की बुद्धि की क्षमता के अनुसार वे पहले पात्र की शुद्धि और योग्यता जांचने के बाद ही ज्ञान समृद्धि का वितरण करते हैं। श्री रामचन्द्र वामन पाटणकर कस्टम विभाग में 30 रूपये माहवर पर कार्यरत थे। वे अक्सर बालकृष्ण बुवा मठ जाकर अक्कलकोट महाराज के स्वरूप (फोटो) के दर्शन हेतु जाते रहते थे। मुम्बई में जब भी दासगण J कीर्तन व प्रवचन करते वे वहां अवश्य जाते। इतने पर भी वे बाबा में विश्वास नहीं करते, उनकी राय में बाबा एक मुस्लिम थे। एक समय उनके एक मित्र श्री गणु श्याम गुप्ता ने उन्हें शिरडी अपने साथ चलने को कहा। वे इस शर्त पर चलने को तैयार हुए वे बाबा को दक्षिणा नहीं देंगे, अगर ज़्यादा हो तो केवल एक रूपया अर्पित कर देंगे। अत: वे शिरडी गये और एक होटल में ठहरे। जब वे भोजन करने लगे तो देखा उसमें कीड़े हैं। वे ज़ोर से चिल्लाऐ, क्या हम यहां कीड़े खाने को आये हैं? पश्चात् जैसे ही वे द्वारकामाई गये, बाबा ने पाटणकर को क्रोधित होकर अंदर आने से मना कर दिया। बाबा के कटु वचन सुन वे शिरडी से प्रस्थान करने की सोचने लगे, बाबा से बिना अनुमति लिये ही। अन्य भक्तों ने समझाया कि बाबा शीघ्र ही शांत हो जाते हैं, तब पुन: दर्शनार्थ के लिये द्वारकामाई जाना। जब दोनों मित्र द्व ारकामाई गये, बाबा पाटणकर को देखकर बोले, 'कुछ लोग कीड़े खाने यहां आये हैं।' यह सुन दोनों मित्र हैरान हो एक दूसरे का चेहरा देखने लगे और तुरंत बाबा श्री के श्री चरणों पर नतमस्तक हो गये। उन्हें विश्वास हो गया बाबा सत्य में एक महान संत हैं। पश्चात् बाबा ने श्री पाटणकर को स्वामी समर्थ अक्कलकोट महाराज जी के उसी स्वरूप में दर्शन दिये, जिस स्वरूप (चित्र) के वे दादर मुम्बई के मठ में दर्शन करते थे। उन्हें अनुभव हो गया था कि समर्थ महाराज व बाबा एक ही रूप के दो स्वरूप हैं, दोनों अभिन्न हैं। तब पाठण ाकर ने एक रूपया अर्पित किया। बाबा ने पुन: एक रूपया और दाक्षिणा मांगी जो आदरपूर्वक दे दी गई। बाबा की आज्ञा से वे घर वापिस गये। पाटणकर तीस रूपये महावार पाते थे। घर पहुंचते ही उन्हें अच्छी तन्खाह पर नौकरी मिल गई और आगे सुख-पूर्वक उन्होंने अपना जीवन व्यतीत किया। भक्तगण-साई परम दयामूर्ति हैं और यहां केवल उनकी अनन्य भक्ति की ही ज़रूरत है। भक्त श्रद्धालु और भावार्थी होना चाहिए। फिर उसके मनोरथ पूर्ण होने में कोई कमी नहीं रहती है। (एमब्रोसिया इन शिरडी)

सुधिजन, साई जी का यह जीवन-चरित्र भक्तों के लिये उनकी अमृत कथाओं के पाठापोई (प्याऊ) के समान है। साई की कृपा से जी भरकर इनका पान करें और इस भवसागर की प्रचण्ड अग्नि से स्वयं को बचा लें।

सन् 1901 में श्री वासुदेव जनार्दन मत-गणना ऑफिस में एक क्लर्क के रूप में कार्यरत थे। उस समय नाना साहेब इसी ऑफिस में सुपरीटेनडेंट थे। नाना साहेब ने उन्हें शिरडी जाकर बाबा के दर्शन करने को कहा, क्योंकि वे स्वयं भी शिरडी जा रहे थे। अत: एक दिन नाना साहेब, वासुदेव व अन्य बीस लोग शिरडी आये। वासुदेव इस ग्रुप में सबसे छोटे थे। द्व ारकामाई में बाबा उस समय चिलम पी रहे थे। वासुदेव धूम्रपान नहीं करते थे, उन्हें कुछ भी महसूस नहीं हुआ। परन्तु साथ आये सभी की इच्छा थी कि वे बाबा की चिलम पीयें। तभी बाबा ने चिलम वासुदेव को दी। वे मना करने वाले ही थे कि नाना साहेब ने धीरे से कहा, कश लगाओ, हर कदम पर तुम्हें खुशी मिलेगी। तब वासु ने तीन कश लगाये। बाबा ने चिलम वापस ली परन्तु अन्य किसी भक्त को कश लगाने का सौभाग्य नहीं दिया। इस घटना के बाद वासुदेव ने हर कदम पर तरक्की पाई, जो भी चाहा, उसे प्राप्त किया। समय आने पर अच्छी पेंशन भी मिली। सेवानिवृति पश्चात् उन्होंने स्वयं का सद्‌भाई वाटर सप्लाई का व्यवसाय शुरू किया और साथ ही कोपरगांव ऐलेक्ट्रिक कम्पनी के मैनेजिंग एजेण्ट का कार्य भी संभाला। वे अक्सर यही कहते- जो कुछ भी मुझे मिला वो सब बाबा श्री की कृपा से ही मिला।

सन् 1918 में बाबा श्री ने महासमाधि ली। पिछले सौ वर्षो में एक अत्यंत लोक हितकारी और दयावान संत और एक उच्च कोटि के ईश्वर के अवतार के रूप में उनका नाम और ख्याति सम्पूर्ण विश्व के कोने-कोने में फैल गई है। प्रतिदिन विभिन्न राष्ट्रीयता के लोग एक चमत्कारी ढंग से बाबा की कृपा की छाया में आते जा रहे हैं और अपने जीवन में रोमांचक अनुभव प्राप्त कर रहे हैं। उनके मन्दिर विदेशों में भी बनाए जा रहे हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि साई बाबा की भक्ति विश्व भर में बहुत तेज़ी से फैल रही है। ऐसा बाबा की रहस्यमयी देवी इच्छा के अनुसार ही हो रहा है।

साई मात्र तुम्हारे और हमारे ही नहीं हैं वे सर्वभूतों में व्याप्त हैं। जैसे सूर्य सकल जगत का है, उसी प्रकार साई भी हैं।

संकलन: योगराज मनचंदा

साभार: आध्यात्मिक विचार शिरडी साई बाबा

साई मंदिर नैशविले टेनेसी अमेरिका में घनश्याम बावरा द्वारा साई भजन

बाबा के परम भक्त और सुप्रसिद्ध भजन गायक घनश्याम बावरा इन दिनों अमेरिका की यात्रा पर हैं। इस दौरान उन्होंने अमेरिका के नैशविले टेनेसी में स्थित साई बाबा मंदिर में वीरवार को बाबा के समक्ष साई भजनों की प्रस्तुति दी। अमेरिका के बहुत से भक्तों ने उनके भजनों का आनन्द लिया।

इस मंदिर में बहुत से भक्त वीरवार को बाबा के दर्शन के लिए आते हैं। आरती के पश्चात सभी को प्रसाद वितरित किया जाता है और सबसे अच्छी बात ये है कि सभी भक्त लाईन में लगकर बहुत ही सभ्यता और प्रेम के साथ लंगर प्रसाद ग्रहण करते हैं। **-अनिल चढ्ढा**

गीतांजली द्वारा साई अमृतवाणी पाठ

दिल्ली: दिनांक 14 मई 2024 को बाबा की परमभक्त गीतांजली छाबड़ा के निवास स्थान राजा गार्डन में मासिक अमृतवाणी का पाठ आयोजित किया गया। सभी भक्तों ने मिलकर अमृतवाणी का पाठ किया उसके बाद भक्तों ने साई बावनी, हनुमान चालीसा व साई कष्ट निवारणी का पाठ भी किया गया। तत्पश्चात् गीतांजली जी, मोना जी एवं पूजा जी ने साई भजनों का गुणगान किया। सभी भक्तों ने उनके साथ-साथ गाकर एवं तालियां बजाकर उनका साथ दिया। बाबा की पालकी भी निकाली गई। अंत में सभी भक्तों ने मिलकर आरती की और उसके बाद सबने स्वादिष्ट प्रसाद ग्रहण कर प्रस्थान किया।

गीतांजली जी हर महिने अपने घर में अमृतवाणी का पाठ करवाती हैं और स्वयं भजनों का गुणगान भी करती हैं। **-पूजा**

नारायणी धाम स्थित साई मंदिर हरि कुंज का स्थापना दिवस

दिल्ली: दिनांक 19 मई 2024 को हरि कुंज सोसाईटी, हरि नगर के नारायणी धाम में स्थापित साई बाबा मंदिर का स्थापना दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रात: 11 बजे हवन किया गया। तत्पश्चात् गायक श्री रवि शर्मा जी ने भजनों का गुणगान किया। उन्होंने अनेक मधुर भजन सुनाये और उनके भजनों पर कई

भक्तों ने भाव विभोर होकर नृत्य भी किया। सारा माहौल साई के रंग में रंगा हुआ था। अंत में आरती की गई और सबको फल प्रसाद बांटा गया। उसके बाद सभी ने स्वादिष्ट लंगर प्रसाद ग्रहण कर प्रस्थान किया। **-गुरबचन सिंह**

श्री राधा कृष्ण मंदिर सैनी एन्कलेव में सुन्दरकाण्ड पाठ

दिल्ली: दिनांक 7 मई 2024 को श्री राधाकृष्ण मंदिर, सैनी एन्कलेव, दिल्ली में चौथा मासिक सुन्दरकाण्ड पाठ का आयोजन किया गया। पंडित श्री हीरामणि भट्ट जी ने विधिवत् अर्चना की तथा उसके पश्चात् हनुमान भक्त

जी ने अपनी मधुरवाणी से श्री सुन्दरकाण्ड का मंगलमय पाठ भजनों द्वारा करके पूरे महौल को भक्तिमय बना दिया। भक्तों ने इस कार्यक्रम में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। भजनों को सुनकर सभी भक्त मस्ती में झूमने को मजबूर हो गये। सभी भक्तों ने श्री सुन्दरकाण्ड के पाठ के पश्चात् श्री हनुमान चालीसा का पाठ एवं हनुमान जी की आरती की। श्री सुन्दरकाण्ड पाठ के पश्चात् सभी भक्तों ने स्वादिष्ट भंडारे का प्रसाद ग्रहण किया।

श्री ओ.पी. कपूर जी ने विदित कराया कि हर मंगलवार को रात्रि 8 बजे श्री हनुमान चालीसा का पाठ होता है तथा हर रोज़ प्रात: 6:30 बजे बाबा की

काकड़ आरती, सांय 7:30 बजे धूप आरती एवं नैवैध अर्पण किया जाता है एवं रात्रि 9 बजे शेज आरती की जाती है। हर वीरवार प्रात: 6:30 बजे बाबा का मंगलस्नान होता है एवं बाबा को चोला अर्पण किया जाता है। **-ओ.पी. कपूर**

साई ध्यान मंदिर पानीपत के भक्तों द्वारा हरिद्वार यात्रा

पानीपत: दिनांक 4 मई को सुबह 6:00 बजे श्री राजकुमार डाबर जी के निवास स्थान, फतेहपुर चौक तहसील कैंप पंजाब नेशनल बैंक

वाली गली से बाबा की पालकी शोभायात्रा बड़े ही धूमधाम से निकाली गई। पालकी शोभायात्रा का शुभारंभ नारियल फोड़कर किया गया। सुबह 7:30 बजे शोभा यात्रा को जैन साहब ने हरी झंडी देकर रवाना किया। प्रसिद्ध समाजसेवी विजय जैन जी व समाजसेवी सतीश शर्मा जी और उनके सभी साथी पालकी में उपस्थित रहे। हरिद्वार में बाबा की मूर्ति स्थापना दिवस पर साई ध्यान मंदिर के सभी भक्तों को साई नागपाल जी ने बाबा का समृति चिन्ह देकर व टोपी पहनाकर सभी को सम्मानित किया। शाम को 4:00 बजे हर की पौड़ी से पानीपत के सभी भक्त पालकी शोभायात्रा में शामिल हुए व बाबा को स्नान कराया। अगले दिन सुबह 5:00 बजे बाबा को गंगा स्नान कराकर पानीपत के भक्तों ने एक

भव्य पालकी निकाली। पालकी बाज़ार से होते हुए बाबा के मंदिर में पहुंची जहां पर सभी भक्तों ने आशीर्वाद प्राप्त किया और पानीपत के लिए प्रस्थान किया।

साई ध्यान मंदिर पानीपत के प्रधान राजकुमार डाबर व समस्त सेवादार यशपाल शर्मा जी, विकी साई, सूबेदार प्रताप सिंह, महेश आनंद, राजेश ठुकराल, रामलाल भाटिया, सोनू वर्मा, जोनी भाई, राकेश शर्मा, ब्रह्मदत्त शर्मा, उत्कर्ष मल्होत्रा, कृष्ण असीजा, सचदेवा जी, पंकज फार्मासिस्ट, श्यामलाल, रवि, जितेंद्र, रविंदर, गौतम, राहुल, किशन लाल आहूजा, बंटी भाई, बिट्टू, रमेश, अशोक नारंग, टोनी जय सिंह, रामपाल, राहुल, नितिन, हंसराज, सुमित साई, पंडित दीपक शर्मा, डॉ पंकज कुमार, श्री राज मल्होत्रा, सभी ने हरिद्वार में मूर्ति स्थापना दिवस पर बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया। -डा. पंकज, पानीपत

श्री साई नारायण बाबा की पुण्यतिथि पर पनवेल में विशेष कार्यक्रम

पनवेल: दिनांक 19 और 20 मई 2024 को साई दरबार पनवेल, मुम्बई में सद्गुरू श्री साई नारायण बाबा की तीसरी पुण्यतिथि के अवसर पर विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। दिनांक 19 मई को दोपहर 12 बजे से 6 बजे बाबा संस्थान के सभी केन्द्रों के भक्तों द्वारा अखण्ड श्री साई महिमा पाठ किया गया जो 6 घंटे तक चला। तत्पश्चात् बाबा की महा श्रीचरण पूजा की गई। आरती के बाद सभी को प्रसाद वितरण किया गया।

दिनांक 20 मई 2024 को महासमाधि दिवस के पावन अवसर पर प्रात: 9:45 बजे श्री नारायण बाबा चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा 86 कन्यादान का कार्यक्रम किया गया। दोपहर 12 बजे से 1:30 बजे तक वेदांत मंत्र साधना के कार्यक्रम के पश्चात् सभी भक्तों ने महाप्रसाद ग्रहण किया। दोपहर 2 बजे से 3:30 बजे तक उदक शान्ति मंत्र का जाप वैदिक शास्त्रियों द्वारा किया गया। 4 बजे वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ गुरूजी का रूद्राभिषेक और महाश्री चरण पूजा की गई। इस अवसर पर 140 विधवा स्त्रियों को राशन दान किया गया और कई गरीब बच्चों को ज़रूरत का सामान और भोजन प्रसाद वितरित किया गया। शेज आरती के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ और सभी को प्रसाद वितरित किया गया।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में भक्तों ने आकर कार्यक्रम में भाग लिया और बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम का आयोजन श्री खेमचंद गोपालानी, श्री राम थदानी, श्री रामलाल चौधरी के मार्गदर्शन में श्री साई नारायण बाबा आश्रम और श्री भगवती साई संस्थान के सभी सदस्यों द्वारा बड़ी श्रद्धापूर्वक किया गया।

कमाल हो गया

एक बार मैंने अपने घर पर शाम को गरिष्ठ (तला हुआ) भोजन कर लिया। जबकि ज्यादातर मैं गरिष्ठ भोजन करना पसंद नहीं करता हूं। गरिष्ठ भोजन करने के बाद मैं सोफे पर ही लेट गया। लेटते ही मुझे नींद आ गयी। आधी रात को मेरे पेट में हल्का-हल्का दर्द होना शुरू हुआ। घड़ी देखी तो उस समय 1 बज रहा था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि अब मैं क्या करूं। घर में भी किसी प्रकार की कोई पेनकिलर दवा नहीं थी। दर्द भी तेज़ होता जा रहा था। एकाएक मेरा ध्यान उदि पर गया क्योंकि मैं कई बार उदि का प्रभाव अपनी पत्नी के ऊपर देख चुका था। मैं उठा और मैंने उदि को जल में मिलाकर पी लिया और थोड़ी सी उदि पेट पर भी लगा ली। इस दौरान मैं श्री साई बाबा का नाम जाप भी करता रहा। तभी कमाल हो गया। इतनी विधि करने के बाद कहां गया दर्द मुझे पता भी नहीं चला और मैं पुन: नींद के आगोश में चला गया।

-रमेश कुमार सिन्हा (इंजीनियर) बोकारो

समाधि की सीढ़ी चढ़ेगा जो मेरी मिटे दु:ख दरिद्र और चिन्ताएं सारी

भावानुवाद श्री साई सच्चरित्र, लेखक-पवार काका

दूसरा वचन: इस वचन का सरल सा अर्थ अंगीकार कर लेने पर कितना बड़ा अनर्थ हो सकता है, इसकी तो कल्पना भी रोंगटे खड़े कर देने वाली होगी। इस वचन का सीधा अर्थ ग्रहण कर यदि सभी शिरडी आए व बाबा की समाधि की सीढ़ी चढ़ने का भरसक प्रयास करें तो भाग-दौड़ मच जायेगी और कुछ वर्षों पूर्व मांढरदेवी के मंदिर में असंख्य लोगों की मृत्यु के कारणीभूत प्रसंग की पुनरावृति होने लगेगी। वास्तव में बाबा देहधारी रहते समय भी समाधि अवस्था में नहीं थे और आज भी नहीं हैं। वह लौकिक तथा पारलौकिक दोनों ही जगत में सदैव रहकर व्यवहार करते थे और करते हैं।

ब्रिटिश लेखक श्री आर्थर ओसबोर्न ने 1957 के वर्ष में 'The Incredible Sai Baba' नामक पुस्तक जो भक्तों के प्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित है, लिखी थी, उसमें उन्होंने एक भक्त का हवाला देते हुए वर्णन किया है कि- One Noticeable difference between Sai Baba and other saints struck me. I have visited other notable saints also and I have seen them in a state of trance or samadhi, in which they were entirely oblivious of their body. Then I have seen them recovering of their surroundings, knowing what is in our hearts and replying to our questions. But with Saibaba there was this peculiar difference, He did not need to go into samadhi in order to achieve anything or to attain higher status or knowledge.

He was every moment exercising a dual consciousness. He was constantly exercising and manifesting the power and features proper to both states of consciousness. Other saints would forget their body and surroundings and then return to them. but Saibaba was constantly both, in and outside the material world that was always in the knowing state.

इस पर से पुन: एक बार यह स्पष्ट हो जाता है कि बाबा ने कभी समाधि ली ही नहीं और आज भी वह समाधि अवस्था में नहीं हैं, क्योंकि आगे के एक वचन में बाबा कहते हैं-

नित्य मैं जीवित, जानिये यही सत्य।
नित्य लीजिये प्रचीति अनुभव से।।

फिर बाबा 'मेरी समाधि की पायरी जो चढ़ते।' इस वाक्य का प्रयोग क्यों कर रहे? पायरी चढ़ना-अध्यात्म की पहली पायरी चढ़ना अर्थात् साई नाम का ध्यान, साई नाम का स्मरण, चिंतन करना। पायरी चढ़ना अर्थात् नवविधा भक्ति की पहली कड़ी-श्रवण, कीर्तन, स्मरण इन तीन भक्ति मार्गों से होने वाली बाबा की भक्ति। बाबा की समाधि, यही प्रथम चरण है। वह ईश्वर के किस खेल अवस्था का उल्लेख कर रहे हैं यह देखना महत्वपूर्ण है।

बाबा समाधि अवस्था में हैं ही नहीं, वह तो सदैव कार्यरत हैं। फिर यह समाधि कौन सी? यह है साई नाम की समाधि। 'मेरे नाम की समाधि लगाइये' ऐसा बाबा का अभिप्राय है। ऐसी समाधि अवस्था प्राप्त करना, यही भक्ति की पहली पायरी चढ़ना अर्थात् पहली मंज़िल पार करना है।

शिरडी में स्थित बाबा की समाधि पर दौड़-भाग कर जाना, देह को कष्ट

पहुंचाना, किसी का आधार पाकर सीढ़ियां चढ़ना इस वचन का इतना संकुचित अर्थ नहीं है। मेरे नाम का ध्यान करो। मेरे नाम की समाधि लगाओ, इसी से तुम्हारे सब दु:ख नष्ट हो जाएंगे। यही इसका गूढ़ अर्थ है।

इस वचन में कहा गया है कि 'दु:ख वह हरती सारे उनके' दु:ख नष्ट हो जाएंगे, गल जाएंगे, मिट जाएंगे इन शब्दों का प्रयोग नहीं किया गया है। 'दु:ख वह हरती सारे', बाबा ऐसा कह रहे हैं।

दु:ख वह हरती सारे अर्थात सुख-दु:ख की भावनाऐं स्वयं अपनी पराजय स्वीकार करेंगी। सुख-दुख की भावनाओं पर विजय प्राप्त कर, सुख-दुख की भावनाओं से परे 'भाव बिना सुख-दु:ख' वह अवस्था प्राप्त होगी। सुख का हर्ष भी नहीं होगा और दु:ख का दर्द भी महसूस नहीं होगा, इस प्रकार की उन्मनी अवस्था प्राप्त होगी। प्रारब्ध भोगों के अनुरूप जो सुख-दु:ख के भोग भोगने पड़ते हैं, उसे समाधानपूर्वक भोगने का सामर्थ्य भक्तों को प्राप्त होगा। ईश्वर द्वारा रचाई हुई इस मोहमयी नगरी के नियमों का यथार्थ स्वरूप तथा भ्रम जान लेना, यही दु:ख हर लेना होता है।

यह चराचर, यह सृष्टि, वह सकल दृष्यजात जगत कितना भ्रामक है, भयावह है, विकल्प निर्माण करने वाला है, इस बात का समुचित ज्ञान होना अर्थात 'दुख वह हरती सारे'। यहां दु:खों को भी अपनी हार मान लेनी पड़ती है। यही है ईश्वर का खेल, यह सृष्टि कितनी भ्रामक है, यह जान लेने की निर्लिप्त अवस्था अर्थात् दु:ख वह हरती सारे। हम अपने प्रतिदिन के नित्यक्रम में 'सूर्य का उदय हुआ', 'सूर्य अस्त हो गया' इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करते हैं। यहीं से भ्रम का आरंभ होता है। वास्तविक रूप में सूर्य का न तो उदय होता है, ना ही अस्त होता है, वह तो अविचल है और इसी भ्रामक संकल्पना पर अपना काल-मापन, ज्योतिष, भविष्य, हवामान ऐसे अनेक शास्त्र आधारित हैं। प्रकृति की भ्रामकता व्यवस्थित रूप से समझ लेना ही 'दु:ख वह हरती सारे' का आशय है। हम प्रतिदिन दर्पण में देखते हैं। क्या दिखाई देता है दर्पण में? अपनी ही उल्टी छवि। बांया भाग दांई ओर और दांया भाग बांई ओर दिखाई पड़ता है, फिर भी 'हम ऐसे दिखाई देते हैं' इसी भ्रम में हम सदैव विचरण करते रहते हैं। यह और ऐसे सारे भ्रम नष्ट करने का सामर्थ्य, साई नाम की समाधि लगाने से प्राप्त होता है। भक्ति की यह सीढ़ी चढ़नी चाहिये। भक्त श्रेष्ठ मेघा को इस पायदान की प्राप्ति हुई थी और उन्हें शाश्वत सुख प्राप्त हुआ था।

उसके शुद्ध अंतर्मन कारण।
प्राप्त हुआ सान्निध्य बाबा का 28-118

हे प्रभु साईनाथ! मेघा को प्रदान की हुई यह भक्ति की पायदान प्राप्त करने की योग्यता, हम में भी आए। यही आप के चरणों में प्रार्थना है। आप के नाम की समाधि लगाने पर ही 'दु:ख हरती सारे' भगवन्! कृपया हम सब पर कृपा करें।

-क्रमश:

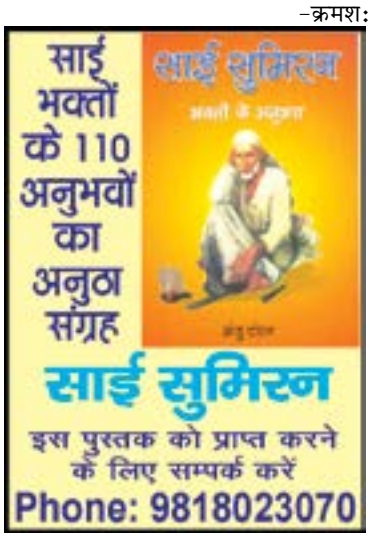

साई मन्दिर मंगलोर का वार्षिक उत्सव

हरिद्वार: दिनांक 10 मई 2024 को साई मंदिर मंगलोर, हरिद्वार में मंदिर का वार्षिक उत्सव बड़ी धूमधाम तथा हर्षोल्लास से मनाया गया जिसमें बड़ी संख्या में भक्त शामिल हुए। कई भक्त देहरादून, मुज़फ्फरनगर, मेरठ, गाज़ियाबाद, पानीपत, सोनीपत आदि दूर-दूर के शहरों से कार्यक्रम में बाबा का आशीर्वाद लेने पहुंचे। डॉक्टर साहब का कन्या इंटर कॉलेज भी है जिसमें बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा दी जाती है तथा उन्हें ड्रैस और जूते मोजे भी दिये जाते हैं। इस मंदिर में समय-समय पर समाज

सेवा के कार्य भी आयोजित किये जाते हैं। जैसे निर्धन कन्याओं का विवाह, रक्तदान शिविर और नेत्रदान के लिए भी प्रेरित करते हैं। इस तरह डॉक्टर साहब सामाजिक कार्य करके कई लोगों की सहायता करते हैं। सावन महीने में शिव भक्तों को भोजन प्रसाद भी वितरण किया जाता है। कोरोना काल में भी डॉक्टर साहब द्वारा गरीब असहाय लोगों की हर तरह से सहायता की गई। बाबा की कृपा से डॉक्टर साहब का परिवार इसी तरह समाज के सेवा नि:स्वार्थ करता रहे। गंगा मैया, भोलेनाथ जी तथा साई बाबा का आशीर्वाद सब पर हमेशा बना रहे। **-राज मल्होत्रा,** हरिद्वार

शिरडी साई बाबा

एक बार बाबा ने 72 घंटे समाधि लगाई शिरडी के लोगों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया तथा उनकी समाधि बनाने की सोचने लगे, परन्तु उनके परम भक्त म्हालसापति जी ने कहा, नहीं बाबा ने मुझे कहा था 72 घंटों तक मेरे शरीर की रक्षा करना अगर मैं नहीं लौटा तो मेरी समाधि बना देना। लोग इंतज़ार करने लगे। आश्चर्य!! 72 घंटों में बाबा शरीर में लौट आये।

इन दिनों दो पुस्तकों की चर्चा है:

1. नाड़ी ग्रंथ भविष्य, लेखक-शशिकांत ओक
2. स्वामी श्री पाद वल्लभ श्री नरसिंह सरस्वती की जीवनी।

नाड़ी ग्रंथ भविष्य, लेखक-शशिकांत ओक जो वायुसेना के अवकाश प्राप्त पदाधिकारी हैं। इस पुस्तक में ताड़पत्र पर लिखी विश्व के लाखों लोगों की भविष्यवाणी है हज़ारों वर्ष पूर्व ऋषि मुनियों द्वारा भविष्यवाणी लिखी गई है। इस पुस्तक के पृष्ठ-91 पर लिखा है शुक्र मुनि शिवतत्व को वंदन कर एक पुण्यवान आत्मा वाले व्यक्ति का वर्णन प्रारंभ कर रहे हैं उनके साथ मैत्रेय एवं महर्षि अगस्त्य भी उपस्थित हैं। शिव के अंश, दत्तात्रेय का अवतार धर्माधिकारी इस महान विभूति का प्रथम कांड का वर्णन प्रारंभ हो रहा है।

पूज्य साई बाबा का जीवन पीड़ित एवं गरीब जनता के दु:ख निवारण करने, उन्हें अधर्म से दूर करने में गया। जिसकी वजह से हिन्दुओं के अलावा अन्य धर्मों के लोगों के लिये भी महान थे उनके अनेक चमत्कारों एवं आलौकिक जीवन के कारण हम महर्षि उन्हें प्रणाम करते हैं।

दूसरी पुस्तक में प्रथम दत्तात्रेय अवतार स्वामी नरसिंह सरस्वती जी कहते हैं कि मैं शिरडी में साई बाबा के रूप में अवतरित होऊंगा। भगवान हनुमान जी के साथ भी बाबा से सम्बंधित वार्तालाप है।

-डॉ. पी.राम केडिया, एम.डी.
खरमनचक, भागलपुर (बिहार)

काल

एक सिद्ध मुनीम के इकलौते नादान बच्चे को एक सर्प ने डंस कर मार डाला। मुनीम ने उस विषैले सर्प से प्रश्न किया, 'इस नादान बच्चे ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था जिससे तुमने इसके प्राण को हर लिया।' उस सर्प ने जवाब दिया, 'मैं सर्प नहीं हूं! मैं काल हूं। मुझे इस रूप में आकर इसके प्राण हरने का हुक्म था।' मुनीमजी ने घबरा कर सर्प से पूछा कि, 'अगर ऐसा ही है तो क्या मेरे प्राण लेकर भी आप किसी न किसी रूप में आकर, मुझे मार देंगे'? उस सर्परूपी काल ने कहा 'हां मैं अक्षराक्षर सत्य कह रहा हूं कि तुम्हारी भी ऐसी ही गति होगी।' 'अगर मेरी भी ऐसी ही गति होगी तो आप किस रूप में आकर मेरे प्राण को हर लेंगे?' मुनीम ने पूछा। उस सर्प ने उत्तर दिया कि 'अगले साल श्रावण मास के कृष्ण पक्ष के दशमी के दिन एक मगरमच्छ के रूप में काल आकर आपके प्राण को हर लेंगे।' यह कहकर वह सर्पराज अदृश्य हो गया। इतने में वह मुनीम डरकर उस शहर को छोड़कर ऐसी जगह जाकर रहने लगा जहां न कोई समुद्र, न नदी या न तालाब था। जिससे कि न जल होगा न ही मगरमच्छ होगा। ठीक दूसरे साल श्रावण मास में उस मुनीम के सेठ के लड़के की शादी हरिद्वार में तय हुई। वह सेठ अपने हर कार्यक्रम में उस मुनीम को साथ ही रखता था, क्योंकि वह मुनीम ही अपने सेठ के सभी कार्यों को संभालता था।

अब मुनीम ने सेठ के लड़के की शादी में जाने में असमर्थता प्रकट की। तब सेठ ने कहा 'मुनीम जी! मैं अच्छी तरह आपकी समस्या को जान सकता हूं, आप जल से दूर रहकर इस शादी के कार्यों को संपन्न करेंगे तो मुझे बड़ी खुशी होगी।' मुनीम ने अपने सेठ की बात मान ली और सेठ के लड़के का विवाह निर्विघ्न संपन्न हुआ।

हमारे हिंदुओं के प्राचीन प्रथाओं में जब किसी ब्राह्मण या व्यक्ति को दान दिया जाता है, अगर संभव हो तो दाता व लेने वाले दोनों घुटनों तक के जल में खड़े रहकर दान देना-लेना महत्वपूर्ण और लाभदायक बताया गया है। तो उस सेठ ने मुनीम को दान देने के लिए घुटने के नीचे तक कम पानी में खड़े रहकर दान स्वीकार करने का अनुरोध किया। जिससे कि इतने कम पानी में किसी भी प्रकार से मगरमच्छ आने की संभावना नहीं हो। वह मुनीम सेठ के अनुरोध से घुटने से नीचे तक पानी में खड़े रहकर दान स्वीकार करने लगा। ठीक उसी देने-लेने के क्रम में एक छोटा सा मगरमच्छ मुनीम के पैरों को पकड़कर मुनीम को गहरे पानी में ले गया।

शिक्षा: काल की गति को कोई समझ नहीं सकता है। न मालूम किस रूप में आकर हमें हर कर ले जाये। एक ज्ञानी अंतिम क्षण की सदा तैयारी में रहता है जबकि एक अज्ञानी इस चीज़ पर बिल्कुल ध्यान नहीं देता।

संकलन: सद्गुरू श्री साई नारायण बाबा
आभार: ज्ञान सागर

शरणागत भजन ग्रुप द्वारा गुरूग्राम में साई भजन

गुरूग्राम: दिनांक 5 मई 2024 को डी.एल.एफ. न्यू टाउन हाईट्स, सैक्टर-90, गुरूग्राम के निवासी रंजीत जी और दिप्ती जी ने अपने बेटे गुरबक्श का दूसरा जन्मदिन बाबा के चरणों में बड़ी धूमधाम से मनाया। उन्होंने इस अवसर पर साई भजन संध्या का आयोजन किया। जिसमें शरणागत भजन ग्रुप के परवीन मलिक जी और शिल्पी मदान जी ने भजनों

का गुणगान किया। उन्होंने कई लोकप्रिय भजन सुनाए। उन्होंने अपने भजनों से भक्तों को साई भक्ति में सराबोर कर दिया। भजनों के बाद पंडाल में भक्तों ने नाचते-गाते हुए बाबा की पालकी निकाली। अंत में आरती की गई। तत्पश्चात् अति स्वादिष्ट बाबा के भंडारे का आयोजन किया गया। छाबड़ा परिवार द्वारा सम्पूर्ण कार्यक्रम का आयोजन बड़ी श्रद्धा और प्रेम के साथ किया गया। सभी ने रंजीत जी और दीप्ति जी को उनके बेटे के जन्म.

दिन की बधाईयां दी। बाबा की कृपा और आशीर्वाद बच्चे पर सदा बना रहे, इसी दुआ के साथ सभी ने नन्हें गुरबक्श को आशीर्वाद दिया। **-गायत्री सिंह**

-पृष्ठ 5 से आगे

साई मंदिर हरिद्वार में स्थापना दिवस ...

श्रद्धेय श्री सुभाष दत्ता जी ने 31 वर्ष पूर्व की। सभी भक्तों ने स्व. श्री सुभाष दत्ता को स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम को सफल बनाने में मैनेजिंग ट्रस्टी श्रीमती प्रिया दत्ता, श्रीमती उषा मेहता, श्रीमती सुमन मल्होत्रा, श्रीमती मीनू वाधवा, श्री चन्द्रभान शर्मा, श्री ललित खुल्लर, श्री नरेश शर्मा, श्री राकेश दत्ता, श्री के.एल. सेतिया, श्री विजय शर्मा,श्री मोहित दत्ता, श्री मधुर दत्ता, श्री रमेश अरोड़ा, श्री संजीव वर्मा, श्री सुनीत कत्याल, श्री भरत मेहता, श्री अक्षय मेहता, श्री के.एल. कक्कड़, श्रीमती नीरू सहगल, श्री अरूण सहगल, श्री टोनी वाधवा, श्री सुनील नागपाल, श्रीमती नीलम नागपाल, श्री ललित नैय्यर व श्री एम.एम. कपूर ने योगदान दिया।

सभी भक्तों को हर वर्ष होने वाले इस भव्य कार्यक्रम का पूरे वर्ष इंतज़ार रहता है। इस कार्यक्रम का आनंद लेने के लिए दूर-दूर के शहरों से भक्तगण हरिद्वार आते हैं और बाबा का आशीर्वाद भी पाते हैं।

संत समागम कीजिये, तजिये और उपाइ सुन कर बहुते ऊबरे, संत संगति मैं आई

लखनऊ: दिनाक 4 मई को कुछ ऐसा ही अनुभव सभी साई भक्तों को हुआ जब शिरडी पालकी यात्रा 2024 के विषय में और पंढरपुर यात्रा के बारे में बताया गया। साई आश्रम ट्रस्ट लखनऊ के तत्वाधान में आयोजित वार्षिक शिरडी पालकी यात्रा का शुभारंभ दिनांक 4 मई को हुआ जिसमें यात्रा में सम्मिलित होने वाले सभी भक्तों

का समागम हुआ। इस यात्रा का विशेष आकर्षण पंढरपुर यात्रा है जिसके विषय में ट्रस्ट के स्तंभ इंद्रेश सिंह और हिमांशु श्रीवास्तव द्वारा बताया गया। इंद्रेश जी ने भक्त पुंडरीक की एक रोचक कथा भी सुनाई। इसके अतिरिक्त हिमांशु श्रीवास्तव (साई प्रचारक) ने पंढरपुर को साई सच्चरित्र से जोड़ते हुए, दासगणु महाराज के शिरडी माझे पंढरपुर से जोड़ा और विट्ठल को विट्ठ या ईंट से जोड़ा। इन रोचक प्रसंगों के पश्चात भजन संध्या कार्यक्रम प्रारंभ हुई और मीनू सचदेवा जी (साई की मीरा) ने अपने साथी वादकों के साथ अपने कर्णप्रिय भजनों से समां बांध दिया। एक के बाद दूसरा भजन जैसे साईबाबा त्रिपुरारि मेरा आपकी कृपा से साई राम चले आओ गाले भजन, साई भजन ने भक्तों को शिरडी पहुंचा दिया। उपस्थित जनों में साई परिवार के वरिष्ठ सदस्य शिव राम त्रिपाठी जी, राजेश पटेल, दानवीर दीपक, अतुल मिश्रा, अभिषेक मिश्रा, मुकेश चौरसिया, मनोज मिश्रा, आदि रहे। इस अवसर पर साई के अनन्य भक्त जय शंकर वर्मा जी (बूटी काका), गायत्री जैसवाल, नंदिता पाठक, रजनी सक्सैना, इंदु श्रीवास्तव, नीलिमा निगम, डॉ. रितु जायसवाल, किरन सिंह सुनील कुमार सिंह एडवोकेट, निति न गुप्ता आदि उपस्थित थे। बाबा का भोग हम सभी की प्रिय और बाबा की अनन्य सेविका सुधा कुदेशीया जी द्वारा लगाया गया। जिसमें बूटी काका, शिवराम त्रिपाठी, रतन मिश्रा ने भी सहयोग किया। परिवार के मुखिया श्री संजय मिश्रा जी और हमारी पूज्यन्ते भाभी श्रीमती संध्या मिश्रा द्वारा इस समारोह का समापन किया गया एवं अपने एक प्रियजन श्री सुरेश शुक्ला व रेखा शुक्ला की 41वीं वैवाहिक वर्षगांठ मनाई गई। सभी उपस्थित भक्तों में एक उत्कंठा दिखी और सब लोग शिरडी पालकी यात्रा के लिए प्रस्तुत दिखे। संजय मिश्रा जी ने बताया कि ऐसे आयोजन किसी एक व्यक्ति के प्रयास से फलीभूत नहीं हो सकते हैं वरन सबका सम्मिलित प्रयास ही ऐसे आयोजनों को सफल बनाते हैं। सबको समय समय पर पालकी की तैयारियों से अवगत करवाने का आश्वासन देने के साथ और भंडारे का प्रसाद ग्रहण करने के आग्रह के साथ ही इस समारोह का समापन हुआ। कार्यक्रम में श्रीमती मनोज सिंह, सुधा गुप्ता, मनोज मिश्र, मनोज मिश्र (संवाद सूत्र), मनोज बाबा पुजारी, डा मीना पाण्डेय, पंकज शर्मा, मनोहर जी, अनुराग (सी.ए.), शिखा मिश्र, आदरणीय अजय त्रिपाठी (मुन्ना), गया वर्मा नाना जी, सरला, अनिल टंडन, उमेश मिश्र, सिद्धेश्वरी देवी आदि अनेक भक्तों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कर बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया। **-हिमांशु श्रीवास्तव**

शिरडी की मिट्टी घाव भरती है

'हालांकि एक उत्पीड़ित और परेशान व्यक्ति जैसे ही मस्जिद में कदम रखता है, वह खुशी के रास्ते पर होता है। यहां का फकीर बहुत दयालु है और वह रोग को ठीक कर देगा और प्रेम और दया से सबकी रक्षा करेगा।' (अध्याय-13, श्री साई सच्चरित्र)

आनंदी ने अपने बेटे की बगल से थर्मामीटर निकाला। 101 डिग्री सैल्सियस पढ़ते ही उसके माथे पर चिंता की लकीरें फिर से दिखने लगी। 'उसके माथे पर गीला कपड़ा रखो और कल सुबह डॉक्टर को दिखाओ' उसके पति राजेश ने कहा। दोनों अपने 5 साल के बेटे को लेकर बहुत चिंतित थे जिसे पिछले 5 दिनों से बुखार आ रहा था।

आनंदी और राजेश ने बड़ी मुश्किल से मनमाड का टिकट लिया था। उनकी लंबे समय से शिरडी यात्रा महीनों की योजना के बाद सम्पूर्ण होने वाली थी। राजेश ने उस मार्ग पर चलने वाली भीड़भाड वाली ट्रेन में मनमाड के लिए दो टिकटों का प्रबंधन अपने सभी संपर्कों का उपयोग कर प्राप्त किया था। जब योजना पूरी होने ही वाली थी, तो उनका 5 साल का बेटा अखिल बीमार पड़ गया और उनका हौंसला टूट गया।

बच्चे को हर छह घंटे में बुखार हो रहा था और आनंदी ने खुद को एक और रात जागकर बिताने के लिए तैयार किया। अखिल पानी की एक बूंद भी नहीं ले पा रहा था, खाना तो दूर की बात है। आनंदी ने सब कुछ उसे जबरन खिलाने की कोशिश की, पर वह उल्टी कर देता।

'क्या यहां दर्द होता है?' डॉक्टर ने अगली सुबह उसका पेट धीरे से दबाते हुए पूछा।

'नहीं' बच्चे ने धीमी आवाज़ में कहा। 5 दिन के बुखार ने बच्चे को बहुत कमज़ोर बना दिया था।

'यहां?' डॉक्टर का हाथ धीरे से दूसरी तरफ चला गया।

'डॉक्टर नहीं' बच्चे ने जवाब दिया।

वह एक पल के लिए चुपचाप बच्चे के सामने खड़ी रही, यह पता लगाने की कोशिश कर रही थी कि क्या परेशानी है। वह कोई साधारण चिकित्सक नहीं थी, एक चिकित्सक के रूप में 3 दशकों का अनुभव रखती थी। स्वयं बाबा के कट्टर भक्त होने के कारण, डॉक्टर स्पष्ट रूप से जानती थी कि वे उनके धैर्य की परीक्षा ले रहे हैं। जैसे ही बच्चा अपनी मां के पास बैठने के लिए जांच की मेज़ से चला गया, डॉक्टर आई और अपनी कुर्सी पर बैठ गई। आनंदी अब एक चिंतित मां थी, वह अपनी शिरडी यात्रा के बारे में भी बहुत चिंतित थी, जो वर्षों की योजना के बाद अब साकार होने वाली थी।

'आनंदी' डॉक्टर ने अपनी कुर्सी पर झुकते हुए कहा, 'अपनी यात्रा जारी रखो। मैंने देखा कि अखिल में कोई संक्रमण नहीं है। मेरा अनुभव कहता है कि यह कोई वायरस से संबंधित है। वह इससे लड़ेगा और निश्चित रूप से, बाबा इससे लड़ने में उसकी मदद करेंगे।' जब वह बोल रही थी वह बाबा की मूर्ति को देख रही थी जिसे उसने अपनी मेज़ पर रखा था। 'यह उल्टी और बुखार रोकने की दवाइयां लिखी हैं।' डॉक्टर ने पर्ची देते हुए कहा। 'बाबा पर अपना पूरा भरोसा रखकर अपनी यात्रा पर आगे बढ़ें, मेरा विश्वास करें, वह ठीक हो जायेगा।' धन्यवाद डॉक्टर', मन में बहुत सारी आशंकाओं के साथ क्लिनिक से बाहर निकलते हुए आनंदी ने कहा।

अगले दिन जब वे अपनी ट्रेन में सवार हुए तो अखिल को अभी भी बुखार था। उल्टी भी बंद नहीं हुई थी। ट्रेन में चढ़ते समय आनंदी बाबा से प्रार्थना करती रही।

'कमरा नंबर 220,' रिसेप्शनिस्ट ने राजेश को चाबी सौंपते हुए कहा। दंपति आखिरकार अपने बीमार बच्चे के साथ शिरडी पहुंचे और 'बायजा मां' नामक एक होटल में ठहरे। 'अब हम सुरक्षित हाथों में है, राजेश ने सोचा। दंपति अपने बीमार बच्चे को गोद में लेकर तेज़ी से कमरे की ओर चले। 'आनंदी चिंता मत करो। हम यहां तीन दिन के लिए हैं और हमें बाबा के दर्शन ज़रूर होंगे। अखिल ठीक हो जायेगा' राजेश ने अपनी व्याकुल पत्नी को सांत्वना देने की कोशिश की।

वे अपने कमरे में जाकर सोने की कोशिश करने लगे क्यूंकि उन्होंने एक बीमार बच्चे के साथ ट्रेन में रात भर की यात्रा की थी, जिससे दंपति मानसिक और शारीरिक रूप से थक चुके थे। उनकी भारी पलकें बंद हो गई और तीनों लगभग तुरंत ही गहरी नींद में सो गए।

'मम्मी...मम्मी' बच्चे के पुकारने से आनंदी की नींद खुली गई।

'हां बेटा' उन्होंने यह अनुमान लगाते हुए कहा कि वह उसे उल्टी करने के लिए वाशरूम तक ले जाने के लिए कहेगा।

'मुझे बहुत भूख लगी है। क्या मुझे कुछ खाने को मिल सकता है?' बच्चे ने पूछा, और आनंदी को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ उसने तुरंत इंटरकॉम लिया और रिसेप्शन पर डायल कर खिचड़ी मंगवाई। उसके बच्चे को कुछ खाए हुए लगभग 5 दिन हो चुके थे। अखिल ने ऐसे खिचड़ी खाई जैसे उसने खिचड़ी बहुत समय से नहीं खाई हो। माता-पिता के अगले 2 घंटे बेचैनी में बीते। उन्हें पूरा यकीन नहीं था कि बीमार बच्चा वास्तव में खाना पचा पाएगा या नहीं। उनकी राहत के लिए, अगले दो घंटे असमान थे। आनंदी ने गोपुरम मंदिर देखने के लिए अपने होटल की खिड़की से झांका और नारंगी रंग के झंडे की एक झलक देखी जो हवा में शान से लहरा रहा था। 'बाबा तेरी लीला अपार।' आपने जो भी परीक्षाऐं दी हैं, हमने उन्हें पास कर लिया है और हम यहां आपसे मिलने आए हैं।' वह मुस्कुराई।

'साई रहम नज़र करना, बच्चों का पालन करना।' जोड़े ने गाते हुए अपने बच्चे को प्यार से गले लगाया। उनका बाबा में अथक विश्वास एक बार फिर साबित हो गया।

संकलन: **सुजय खंडेलवाल, आरती नागेश**

आभार: मिरेकल्स ऑफ साई फॉरएवर एंड बियॉन्ड

साई के चरण कमलों में डा. मोतीलाल गुप्ता की जीवनी

साई बाबा ने तुम्हें आई.आई.एम. (भारतीय प्रबंधन संस्थान) में दाखिले के लिये आशीर्वादित किया है। ये बात डॉ. मोतीलाल गुप्ता ने एक शांतचित्त मुस्कुराहट के साथ कही।

'परन्तु परिणाम तो घोषित हो गये गुरू जी, मेरा चयन नहीं हुआ', मैंने उत्तर दिया।

'नहीं-नहीं, तुम्हारा दाखिला होगा, चिन्ता त्याग दो, बाबा कृपा करेंगे।'

वर्ष 2012 में मुझे संयुक्त प्रवेश परीक्षा (कैट) में बैठना था जो भारतीय प्रबंधन संस्थानों में प्रवेश के लिये दी जाती है। प्रवेश परीक्षा के लिये फार्म भरने के पहले ही गुरू जी से मुझे आई.आई.एम. में दाखिले का आशीर्वाद प्राप्त हो चुका था। यद्यपि आई.आई.एम. की प्रथम सूची में मेरा नाम शामिल नहीं था, मैंने एक द्वितीय श्रेणी के प्रबंधन संस्थान में दाखिला लेने का निश्चय किया तथा गुरू जी से आशीर्वाद लेने पहुँची। उन्होंने प्राय: यह आश्वासन दिया कि मेरे प्रयास का परिणाम अवश्य मिलेगा। एक सप्ताह के बाद मुझे ई-मेल से सूचना मिली कि मेरा चयन आई.आई.एम. कोज़िकोड की अंतिम निणार्यक सूची में हो गया है। जिस दिन मैं कोज़िकोड पहुँची, उसी रात मैंने साई बाबा को स्वप्न में देखा और जैसे ही मैंने बाबा को दंडवत प्रणाम किया वैसे ही मैंने देखा कि बाबा की जगह गुरू जी मुझ पर मुस्कान बिखेर रहे हैं।

डॉ. मोतीलाल गुप्ता एक संत और लोकोपकारी समाजसेवी हैं। साई धाम, फरीदाबाद, एक गैर सरकारी, गैर मुनाफा वाला संस्थान है जो शिरडी साई बाबा टेम्पल सोसायटी के नाम से पंजीकृत है जिसके संस्थापक एवं अध्यक्ष हैं, डॉ. मोतीलाल गुप्ता। डॉ. गुप्ता का सपना है कि भारत के सभी बच्चों को उच्च कोटि की शिक्षा मिले। इसी सपने को पूरा करने के लिये उन्होंने सन् 2004 में 'शिरडी साई बाबा स्कूल' की स्थापना की जहाँ गरीब, निराश्रित बच्चों को अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा नि:शुल्क प्रदान की जाती है।

सन् 2013 में शिरडी साई बाबा स्कूल की द्वितीय शाखा- ग्राम निसवारा, ज़िला महोबा, उत्तर प्रदेश में स्थापित की गई ताकि सुदूर ग्रामीण क्षेत्र के अभावग्रस्त एवं वंचित बच्चों को भी नि:शुल्क आधुनिक शिक्षा प्राप्त हो सके। सन् 2019 में इस संस्थान के अंतर्गत दो विद्यालय चल रहे हैं जहाँ 2000 गरीब एवं वंचित बच्चों को नि:शुल्क उच्च कोटि की शिक्षा के साथ किताबें, कपड़े, पाठन सामग्री, भोजन, स्वास्थ्य सेवाएँ एवं भ्रमण की सुविधा भी नि:शुल्क उपलब्ध कराई जाती है। शिरडी साई बाबा स्कूल, फरीदाबाद, सी.बी.एस.ई. बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त है। 2019 एवं 2020 की दसवीं की सी.बी.एस.ई. बोर्ड परीक्षा में छात्रों ने 90 प्रतिशत से ज़्यादा अंक प्राप्त किये तथा परिणाम 100 प्रतिशत रहा है। वर्ष 2020 में स्कूल को सी.बी.एस.ई. के द्वारा कक्षा 12 की भी मान्यता प्राप्त हो गई है। शिक्षा के अतिरिक्त इस एन.जी.ओ. की अन्य गतिविधियों में शामिल हैं- 18 डिस्पेंसरियाँ, तकनीकि प्रशिक्षण जिसके द्वारा युवकों एवं युवतियों को रोज़गार मिले, गरीब कन्याओं का वस्त्र, बर्तन इत्यादि के उपहार सहित सामूहिक विवाह जो वर्ष में चार चरणों में आयोजित किया जाता है व सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में ज़रूरतमंदों में वस्त्र अथवा अन्य वस्तुओं का वितरण। ये सारी परियोजनाएं, 90 वर्षीय डॉ. मोतीलाल गुप्ता के सक्षम मार्गदर्शन के तहत की जाती हैं जिन्हें प्रेम से 'बाऊजी' कह कर भी संबोधित किया जाता है। इनकी कुशल

प्रबंधन शैली, उत्साह तथा अथक परिश्रम अद्वितीय है।

साई धाम से मेरा प्रथम परिचय सन् 2011 में हुआ। इस विशाल स्कूल में भ्रमण करते हुए, मैंने बच्चों को लाल चेक की कमीज़ तथा खाकी पतलून में सलीके से तैयार पाया। मेरा अनुमान विश्वास में बदल गया कि मानवता की सेवा, वो भी इतने विशाल पैमाने पर किसी साधारण शख्सियत द्वारा संभव नहीं। यह कार्यभार तो स्वयं परमात्मा ने डॉ. मोतीलाल गुप्ता को सौंपा है। यह जीवनी इसी महान विभूति को समर्पित है जिनके लिये मानव-सेवा ही पूजा है।

डॉ. मोतीलाल गुप्ता का जन्म 1934 में ब्रिटिश-शासित भारत के फरीदाबाद में एक व्यावसायिक परिवार में हुआ जो 'मेंहदी वाला' के नाम से जाने जाते थे। 1955 में इन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातक की डिग्री हासिल की, साथ ही इन्हें स्वर्ण पदक से नवाज़ा गया। स्नातक की शिक्षा के उपरांत इन्होंने अपने पारिवारिक व्यवसाय में योगदान दिया। तदुपरांत 1963 में स्वयं का उपक्रम शुरू किया। 1960 में हमारी प्रिय मम्मी जी, स्व. श्रीमति कांता गुप्ता, डा. गुप्ता के सफल एवं आशीर्वादित जीवन की संगिनी बनीं, ठीक उसी तरह जिस तरह यमुना गंगा में जा मिलती है और जिनकी धारा हमें अन्न-जल प्रदान कर तृप्त करती हुई कलकल बहती है।

सन् 1986 की बात है जब मम्मी जी दर्शन के लिये लोदी रोड, नई दिल्ली स्थित साई बाबा के मंदिर जा रही थीं। उस दिन डॉ. गुप्ता को एक आंतरिक अनुभूति हुई कि उन्हें भी दर्शन के लिये मंदिर जाना चाहिये। जिस क्षण वे साई के समक्ष उपस्थित हुए, वे बाबा से एकाकार हो गये। तत्पश्चात् डॉ. गुप्ता ने अपना व्यवसायिक जीवन त्याग दिया और यहाँ से शुरू हुई साई धाम की यात्रा। यह बाबा का चमत्कार ही था कि वे बेची हुई 15 एकड़ पारिवारिक ज़मीन वापस लेने में सफल हुए जिसमें से उन्होंने 3 एकड़ ज़मीन पर साई धाम की स्थापना की। उन्होंने बाबा की एक तस्वीर साई धाम के प्रांगण में पीपल के पेड़ के नीचे रख दी और उन्हें बाबा का परम आशीर्वाद मिला कि वे भूखों को अन्न, गरीबों को शिक्षा, रोज़गार तथा तन-मन से पीड़ित बन्धुओं को लाभ प्रदान कर सकें। जिस प्रकार साई बाबा सदा 'अल्लाह मालिक' का जाप किया करते थे, वैसे ही डा. मोतीलाल गुप्ता अपने परोपकारी कार्यों को बाबा के चरणों में समर्पित कर देते हैं।

गुरू जी शिरडी साई बाबा के सबसे प्रिय भक्तों में से हैं। वो उस दयालु फकीर के प्रतिबिंब स्वरूप हैं जिनका परम उद्देश्य गरीबों की सेवा तथा दीन-दुखियों का कष्ट-निवारण था। साई बाबा तथा गुरू जी का पारस्परिक संबंध श्रीराम-हनुमान तथा श्रीकृष्ण-अर्जुन सरीखा है। यहाँ भगवान और भक्त एकाकार हैं।

एक दिन लोधी रोड के साई मंदिर में बाबा के दर्शन के पश्चात् मुझे गुरू जी की जीवनी लिखने का विचार आया। जब मैंने गुरू जी से अपनी इच्छा प्रकट की तब उन्होंने आशीर्वाद सहित अपनी सहमति दे दी। इस विशाल कार्य को सम्पन्न करने के लिये मैंने अपना अहम साई चरणों में समर्पित कर दिया है। वस्तुत: बाबा ने ही अपने मार्गदर्शन से अपने प्रिय भक्त की जीवनी लिखवाई है।

साई बाबा की जीवनी, 'श्री साई सच्चरित्र' के रचियता, श्री गोविन्द रघुनाथ दाभोलकर ने कहा है कि बाबा अपने भक्तों से कहा करते थे कि काम, लोभ, मोह, क्रोध, ईर्ष्या तथा अहंकार, ये छह विकार धर्म के पथ के बाधक हैं। डॉ. मोतीलाल गुप्ता की जीवनी छह अध्यायों में विभाजित है। हम जैसे-जैसे पुस्तक में आगे बढ़ते हैं, हममें विवेक की वृद्धि होती है। इन छह अवगुणों को परास्त करने से बल एवं बुद्धि में वृद्धि होती है और व्यक्ति परोपकार तथा लोक-हित के कार्यों में सहज भाव से संलग्न हो जाता है। हमारे मन की अशुद्धियाँ छन जाती हैं तथा आत्मिक आनंद एवं शांति की अनुभूति होती है।

जिस प्रकार एक नादान बालक गिर-गिर कर चलना सीखता है उसी प्रकार से मेरा ये अभ्यास आपके समक्ष है। मैं पाठकों से हर प्रकार की त्रुटि के लिये क्षमाप्रार्थी हूँ। मैं साई बाबा को इस जीवनी के पाठकों को उनके स्नेह और कृपा के लिए आशीर्वादित करने की प्रार्थना करती हूँ। -क्रमश:

-साई की चरण धूलि,
गुरू जी की सेवा में, **नीति शेखर**

सैनी एन्कलेव में संकीर्तन

दिल्ली: दिनांक 5 मई 2024 को श्री राधाकृष्ण मंदिर में 11वां श्री श्याम बाबा मासिक संकीर्तन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भजन गायक श्री चमन लाल गर्ग जी ने अपनी मधुर वाणी से भजन प्रस्तुत किये। उनके साथ प्रसिद्ध भजन गायक श्री आशुतोष शर्मा तथा नितिश शर्मा

जी ने भी अपनी मधुर वाणी से भजन प्रस्तुत किये। कड़कड़डूमा, दयानंद विहार, श्याम एन्कलेव से आये सैकड़ों भक्तों ने भजनों का आनन्द लिया। आरती के पश्चात् भव्य भंडारे का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर आदरणीय हर्ष मल्होत्रा जी ने प्रत्याशी पूर्वी दिल्ली लोकसभा, ने भजनों का आनन्द लिया तथा सभी भक्तों का आभार प्रकट किया तथा भगवान से प्रार्थना की कि श्री राधा कृष्ण मंदिर सैनी एन्कलेव में धार्मिक कार्यक्रम होते रहें।

श्रीमति रेनू गोयल ज़िला मंत्री (महिला मोर्चा) ने विदित कराया कि जुलाई 2023 को पहला मासिक श्री श्याम बाबा संकीर्तन का आयोजन श्री राधा कृष्ण मंदिर सैनी एन्कलेव दिल्ली में किया तथा हर माह के प्रथम रविवार को श्री श्याम बाबा का मासिक संकीर्तन होता है तथा सभी भक्त श्री चमन लाल जी गर्ग के भजन सुनकर नाचने को मजबूर हो जाते हैं। रेनू गोयल जी ने विदित कराया कि 12वां मासिक संकीर्तन रविवार 9 जून 2024 को मंदिर में होगा तथा आदरणीय हर्ष मल्होत्रा जी से प्रार्थना की कि 9 जून 2024 को भजनों का आनन्द लें।

-ओम प्रकाश कपूर

हर्ष साई द्वारा गाज़ियाबाद में साई भजन संध्या

गाज़ियाबाद: दिनांक 9 मई 2024 को क्लब हाऊस, वेव एक्जीक्यूटिव फ्लोर्स, वेव सिटी, एन.एच. 24, गाज़ियाबाद में साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। बाबा की महिमा का गुणगान करने के लिए सुप्रसिद्ध भजन गायक हर्ष साई जी को आमंत्रित किया गया। उन्होंने अपने चिरपरिचत अंदाज़ में अनेक मनभावन भजन सुनाकर भक्तों को बाबा की मस्ती में झूमने पर विवश कर दिया। कार्यक्रम का

आयोजन अंबुज जी, अंशुल जी, भूपेंद्र जी, गौरव जी, हिमांशु जी, मनोज झा जी, नवीन जी, सुजीत जी व तजेंदर जी द्वारा बखूबी किया किया। अंत में आरती की गई व सबने भंडारा ग्रहण किया।

Baba's Blessings for a Successful Surgery

This Sai Leela happened in India but has been sent from Australia by a sister whose prayers worked miracles for her elder sister. That is Baba was operating out of two countries in two far apart continents.

On 7th May 2024, I got a call from my elder sister in Delhi saying her left eye retina had suddenly got displaced/detached, blurring the vision of that eye. Naturally, this caused a lot of panic and gave birth to apprehension in her mind. A severe jolt, as it were! She was advised to immediately consult an Ophthalmologist to prevent further damage to the eye. Taking a swift decision, she met an eye doctor who told her to take the only recourse right away- surgery to fix the retina. Any further delay would result in long term harm doctor cautioned, thus increasing her stress. They consulted two or three doctors and zeroed in on, one particular surgeon. He scheduled the surgery for 9th May, a Thursday.

A day earlier, on Wednesday, my sister called me and pleaded that I pray to Baba to help her. I was already quite perturbed, and concerned for my sister, and her urgent tone increased my anxiety. On Thursday morning, I rushed to our Baba's temple in Melbourne, placed my head on His feet and prayed to Him. I pleaded Him to reach out to my sister and conduct the surgery Himself. His presence during the surgery, would certainly ensure everything going smoothly. On that trepidation-filled morning, miles away in Melbourne, I felt Baba Sai's aura and presence very strongly. I knew He was present and near me. He convinced me that He would guide the doctor and assured He would be in the operation theatre throughout the surgery. I heard Him and was at ease that Baba had given His word…all would be well. Meanwhile, I decided to do what I regularly do. Sit down in front of Baba, gaze at Him and let Him dictate what He wanted me to write down that day. You know, with His grace I have the blessing of being able to hear what Baba is telling me and at His behest have been writing His messages each time He speaks. These records help me think and ponder on the message, at a later time.

There I was, alone in Dwarkamai of the Melbourne temple, in readiness to take down His notes for that day. The following is what He dictated.

"I look to the welfare of all my devotees across the seven seas. I stand by their side in the times of crisis and take over the process of rectifying, healing and guidance. My energy, my aura shall surround my child who looks up to me for protection. The energy created shall act as the true medicine to heal human organs. My guidance shall show the direction to the doctor who uses his intelligence to perform the surgery. My blessings for a successful surgery.

Later, I called my sister and tried to boost up her sagging spirits, by trying to convince her that Baba will be taking care of her and that all would be fine. It was still Wednesday night in India. In Australia, I was oblivious of how Baba's Leela would play out. But I was certain that since He had promised, He would be there during the surgery.

On entering the hospital, my sister and her family were amazed to see a picture of Baba at the entrance. There He was, welcoming and leading her! That was a balm to the eyes. But the ears too were soothed. Wonder of wonders, Baba's mantra "Om Sai Namo Namah" was playing throughout the hospital. What an assurance that Baba was already there, even before she could reach the OT.

She was wheeled inside the operation room. The masked surgeon and the assistants prepared to give her anaesthesia and begin the surgery which was expected to take 1 hour. The duration too felt intimidating. But Baba hai na. As promised in the message, He managed the surgeons mind and the doctor used his intelligence, reducing the duration of the surgery to a mere thirty minutes. Can you believe it! What a relief it was to the family on hearing that the surgery was short and a very successful one. A major hurdle had been crossed with complete ease.

Post surgery, my sister opened her eyes. Although drowsy, she was alert enough to mumble to the doctor that she had seen Baba by his side! Baba stood by, overseeing the operation. On hearing this revelation, the doctor was stunned and surprised her with the fact that he is also devotee of Baba. In fact, so is the entire hospital staff.

But Baba's Leela didn't end with the surgery. When she was wheeled into the recovery room, the doctor's wife came to my sister, she gave her a packet saying Baba had asked her to give it to someone special. The lady found it fit to give the packet to my sister. The miracles that our Baba does! Emotions and gratitude filled my elder sister, for Baba had shown His presence in so many ways. **-Bindu Midha**

108 Names of Shri Saibaba

by Satya Shri Sant Vivek Ji

It is my staunch belief that reading or listening of Sai Sanjeevni (108 names of Sai Baba) will dispel all doubts of devotees & remove miseries and sorrows from their lives. They will definitely realise the Self and be One with Shri Sai.

Om Shri Sai Siddha-Sankalpaaya Namah

Sai, whose will prevails. More the man makes a resolve, more his will power diminishes. When his mind unites with the One, all his desires or options are over. Then he does not have to make a Will. A Will of God starts within, no choices remain inside. When no options remain, then only Will of God prevails. Baba himself is running the whole show in this universe but he is not attached to any material or desire. Sai, the real Sadhu, He can reveal the form of the formless to his devotees, enlightening them with the knowledge of God's love. But one has to make an effort. Other person can give food but one has to be hungry to eat and enjoy it. No Master of Saint can help unless a devotee has curiosity and desire to realise the Self. He also needs to have faith and devotion in the Master. My humble salutation to Shri Sai whose will prevails.

Shri Sai Sumiran Times
brings you news, miracles & devotees' experiences with Shirdi Sai Baba from all over the world.
for Subscription & Advertisement Contact:
Anju Tandon Mob: 09818023070
email: saisumirantimes@gmail.com

Dr Swapnil Mane's Dream Project

Dr. Mane Medical Foundation and Reseach Center, Saidham Hospital, Rahuri (Maharashtra) are regularly conducting Cancer Awareness and Free medical check up camps in rural areas of Maharashtra, under the leadership of Dr. Swapnil Mane.

On 23rd May 2024. Dr. Mane conducted Cancer Awareness and Free medical check up camp at Jalake kd Tal: Newasa Dist. Ahmednagar. Doctor Mane, along with his team of doctors and paramedical staff go to rural areas and provide free treatment to the poor people. Dr. Mane has so far conducted 434 Camps, and 12500 free Surgeries have been performed. More than 556500 beneficiaries have benefitted through their free cancer check-ups and medicine distribution camps in over 200 villages of Maharashtra.

Apart from organising these free medical camps, he has a dream project of setting up a 500-beded Multispecialty Hospital at Shirdi, Maharashtra to ensure free and quality healthcare to everyone.

The foundation laying ceremony of 500 bed Cancer Hospital was held on 16th January 2023 at Kakdi, near Shirdi Airport, Shirdi. Financial help for the construction of this hospital is required. For donation please contact: Dr. Swapnil Mane, Dr. Mane Medical Foundation and Research Center, Saidham Hospital, Nagar-Manmad Road, Rahuri, Distt. Ahmednagar (Maharashtra) Pin-413705.

Donations can also be made on the following website of Saidham.
www.saidhamhospital.com
Ph: 02426-235500
7498136701, 8928107128

Shradha Saburi
Hotel
Sai Nityanand
One Minute Walking Distance from Dwarkamai
For Room Booking Contact:
Monu Agrawal
Ph: 8171521277, 9373447866
web: www.feelsure.in
Near Dwarkamai Temple, Back Side of Khule Natyagruh, Shirdi

Hotel J.K. Palace
Nagar-Manmad Highway, Near Bhakta Niwas, Shirdi
Ph.(02423) 255155
7218181876, 9511111009
Visit us: www.hoteljkpalace.com
Email: jkpalaceshirdi@yahoo.com

साई आशीर्वाद ग्रुप
साई भजन संध्या, माता की चौकी व सुन्दरकाण्ड पाठ के लिए सम्पर्क करें
साई की मीरा मीनू सचदेवा
Ph. 9335087459, 8887847946

CITY HANDLOOM
A House of Choice fabrics
Deals in:
Curtain Cloth, Sofa Cloth, Bed Covers, Bed Sheets etc.
Pawan Kumar, Jai Kumar
Phone: 24107177, 9891375855, 9810174840
33A, Sarojini Nagar Market, New Delhi-110023

BUNTY
Furniture & Interior
Deals in : All Kinds of Wooden Furniture
Bunty Ahuja
Shop No. A-8, W.H.S. Timber Market Kirti Nagar, New Delhi-110015
Ph. 8650398971

Baba Came To Bless Me

Lakshmi Beera. I am a citizen of Canada. I am also one of the drops in Sai's Maha Ocean. Just like every devotee of Baba, I was also pulled over to Him and had a number of experiences too. I am going to write 2-3 of my experiences, which happened within a year.

Last year around December, I had performed a pooja for Goddess Lalitha Maata along with other 12 Maatas. Sai devotees of our Lalitha Parayan Group attended the puja at our home in Toronto. I myself cooked around 9-10 dishes to offer to Goddess which would be our lunch after the parayan. It really went well. We did Lalitha Sahasranam Parayan twice, Lingashtakam, Manidweepa Varnana etc. concluded by Aarti. I offered Tambulam which contains a blouse piece, a gift item, beetle (Pan) leaves with nutmegs. We all had lunch and everyone wanted to leave as it was getting dark. In a hurry, I forgot to break the coconut. I thought that I will break it the next day since I was exhausted so I kept the coconut on our kitchen counter top. The next day morning, when I got up and looked at the coconut, to my surprise, it was cracked. This was Maata's and Babaji's miracle. I felt they both were happy with our puja and blessed us. But that day also I left it the way it was, thinking to break it on the 3rd day. So I didn't touch it. Again, the next day, the water of the coconut came out. All this proves that Babaji was very happy with our Bhakti and puja.

I want to share another experince. On Maha

shivaratri day, I did a very little puja. In the evening, I was in a hurry to go to the Baba Mandir because after that I had to attend another puja and overnight bhajans at our friend's house. They perform it every year for Lord Shiva. And we all know that sometimes Saibaba ji also comes in some form and gives us messages and blessings too. He comes in Bhai's body. Babaji kept the name of their house as Dwarakamai. The puja started around 6 PM and continued till morning 6 AM.

So, I was getting ready at our home. Every day, I offer my tea to Baba first, then only I take it. That evening too I did the same thing, and while taking the cup from Babaji, I had a thought that even though it was Lord Shiva's day that day, I offered only to Babaji, again thought in my mind that of course Babaji is none but Lord Shiva so if I offered to Baba, that means it was offered to Lord Shiva itself. As soon as I got this thought, Babaji wanted to prove that my thought was correct. When I turned to other side in the kitchen, a plate in which normally I offer food to Baba every day, started rolling by itself. I was shocked. I was surprised and also felt happy. Then, I went to Dwarakamai house. We had very nice bhajans and puja till 6 AM. Normally, Babaji comes during our bhajan's time. But that day He didn't show up until morning 6:30 AM. Suddenly, Babaji came and everyone was quiet there. He took a flower and looked at everyone and threw that flower at me. I was sitting at the back. Babaji said to me "Mai, I came to your house this evening, did you recognize me? "I said "yes Baba". Babaji said, "I was very happy with your bhakti and devotion. Continue the way you are doing and go more deeper into Bhakti. My blessings are with you". Everyone who was there, felt I was fortunate to have blessings like that.

Sri Sachhidananda Sadguru Sainath Maharaj Ki Jai.

-Lakshmi Beera, Canada

Baba Came to Me

I am devotee of Sai Baba, we live in Kowloon, Hong Kong. I go to Shirdi often. Once in May 2014 we were going to Shirdi by car from Mumbai. We were about to reach when all of a sudden there was big storm. The storm was so fierce that even our car was losing balance. Suddenly, in the storm, I saw Baba running towards me. After some time it started raining & storm also stopped. We reached Shirdi safe & sound & went to office of Shirdi Sai Baba Sansthan. There they gave me a beautiful statue of Sai Baba. I was very happy to have Baba. I realized that Baba had given me an indication that He was coming to me, as I saw Baba running towards me & I actually got Baba's statue, which is now placed in our house temple. I thanked Baba from the core of my heart.

-Shalu Ramesh Pariyani
Kowloon, Hong Kong

Shirdi Sai Baba Temple Inaugurated in Aerocity Delhi

Delhi: On 24th April 2024, Guruji Shri Chandra Bhanu Satapathy ji inaugurated the newly built Shirdi Sai Baba temple in Aerocity, Delhi. It is beautiful temple and the the Idol of Sai Baba is very attractive.

This temple was built by Mrs. Grandhi Varalakshmi and Mr. G.M. Rao of GMR Group. Mr. G.M. Rao warmly greeted Guruji on his arrival. On this occasion many prominent guests/ personalities, Trustees of various Sai Temples, bureaucrats, family members and hundreds of devotees attended the ceremony. After the Aarti very delicious lunger prasad was distributed to all devotees. Mr. G.M. Rao gave prasad and gifts to everyone who attended the program.

On 10th February 2023, the Bhumi Pujan of this temple was performed by Shri Satpathy Guru ji.

Mosquito Eradication Program In Shirdi

Mosquitoes spread 11 known viral infections, including Dengue, Malaria, Encephalitis etc. And all these viral infections are dreadful. Shri Saibaba inspired me to start Mosquito Eradication Program. Initially, we started the Mosquito Eradication Programs in Mumbai, Andheri (West) and Ralegan Sidhi, Dr Anna Hazare's village in Maharashtra.

Having gained experience and the encouraging results in the first two locations, I thought that Shirdi should be my next destination to implement the Mosquito Eradication Program, especially since lakhs of Sai Devotees visit Shirdi every month. Statistics show that more than 2 crore Sai Devotees visit Shirdi every year. And most of them spend nights in Dharamshala, semi open large halls and open sky.

On 7th February this year, Shri Saibaba inspired me to shift my residence in Shirdi. And, on 29th February 24, I was blessed by Baba and got appointed as Sai Sevak by Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi.

In mid-March, I was fortunate to get approval of Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi to implement the Mosquito Eradication Program in Shirdi.

The Program in Shirdi started with a training of the operating staff of Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, on 1st April 24. The

actual Program has started from 2nd April this year.

To start with, Sansthan has selected The Samadhi Mandir Complex (Lendi Baug, Dwarkamai, Hanuman Temple, Baba's Chawdi, 5 entry exit gates etc.), 500 Rooms Bhakta Niwas, Sai Udhyan Bhakt Niwas, Adhikari Niwas, Mangal Karyalay.

In the first phase of the Mosquito Eradication Program, for adult mosquitoes, in just 30 days, the mosquito population has reduced by 90%. Reports suggest almost- nil mosquitoes now, as a result of the program.

Now, we are in the second month of the program. Plans are in place to cover more locations - the two hospitals, three bhakta Niwas buildings, the Prasadalay and the staff quarters. The necessary training of the operators and the supervisors of the locations has been completed.

Soon the program in rest of these locations of the Sansthan will start.

Before the onset of the monsoon, we are committed to complete the training and implement the necessary activities to control the new production of the mosquitoes.

I must express my sincere heartfelt gratitude to the respected CEO, Dy. CEO, AO, HOD HRD and HOD Aarogya Vibhag for their trust, confidence and the support.

I am also thankful to Shri Saibaba, Shri Saibaba Sansthan Trust Shirdi, the local villagers, the police and the other security personnel for their valuable cooperation, without which the program would not have been possible.

-Vinod Bhatia Sai Sevak

Faith is not believeing that God will do what you want. Faith is believeing that God will do what is right.

Baba Sent Wheelchairs

I have Lumbar Canal Stenosis (not able to walk very long), So am not able to walk too much and need a wheel chair to cover long distances like airport check-in etc. Recently, I had gone to Mumbai to attend a Medical Conference.

When travelling to Mumbai, we got the two wheel-chairs we needed, one each for my wife and me, making completion of airport formalities comfortable. During the return journey though, despite filing the request for wheel chairs in advance, due to the heavy holiday rush, we could not get the desired assistance. We reached Bombay Airport at about 3 o'clock in the afternoon and after the drop off, I began walking towards the entrance with great difficulty. My daughter, Dr Smitaben gave me support she could while I tried to cover the long distance, from the drop off point to the Gate, where passengers enter the airport.

While walking along, I suddenly heard, a police officer on duty shouting to stop, asking me to wait right where I was. This alarmed me and I wondered with trepidation, what was going to happen next. But I was to discover later that he was actually an angel in disguise. He ran towards the gate, went inside and came back rather speedily with two wheelchairs, one for me and one for my wife, Bharatiben Raval. To me, the stranger was Sai Baba Himself, who had come to help when I needed it most. Air India hadn't been able to meet our request due to the heavy rush. The dynamic young police officer in uniform himself took command of the wheelchair and brought us to Terminal 44B, from where our flight was scheduled to depart for Ahmedabad. I can't imagine if that policeman had not helped us out, how I would have managed to cover the huge distance between the taxi drop off to the departure terminal. That unknown man saved me from suffering. Who else does that for us other than Sai Baba? Thank you so much Baba for sending timely help each time we need it.

-Dr. Anil V Raval, Unjha

Sahasranama Way of Overcoming Karma

You may go anywhere on the face of this earth, I am always with you. I reside in your heart and I am within you. –Shri Sai Satcharita (Chapter 15, Ovi 67–73)

Why is a person born with everything in life, while another struggles to fulfil even the basic needs? A silver spoon for one, and not even a small piece of bread for another? This is hard to understand. Who decides all this? Do we just follow the course set by a fate maker? Ramana Bhagwan pondered, 'Who am I?' Buddha was intrigued seeing a child, an old man and a corpse; the answers eventually led him to salvation.—

Who is Sai Baba? 'You may ask where I am now and how I can meet you now. But I am within your heart & we can meet without any effort' (Shri Sai Satcharita, Chapter 44, Ovi 162).

Karma is a mystical word in Indian texts; it has also been adapted in the English language, and refers to our actions and their outcomes, which are akin to the cause-and-effect principles. As he recited the sixth shloka of Vishnu Sahasranama, Bhishma, lying on a bed of arrows that pierced every inch of his body, wondered what actions in the past had led to this excruciating pain and humiliation. He asked Lord Krishna, 'I have scanned my 72 previous lives, but could not find a single action which could have resulted in my lying here on this bed of arrows.'

Krishna explained to him that in his 73rd life, as a child, Bhishma had playfully pierced an insect with a sharp thorn. That action resulted in his current suffering.

When Appa Kulkarni died soon after meeting Nana Chandorkar to persuade him to visit Shirdi, Sai Baba pacified the young widow, saying, 'Appa has fulfilled his assignment and he is not entangled in the cycle of birth-and-death.' Appa Kulkarni had not rested until he conveyed Baba's message to Nana Saheb. 'Before you act, you have freedom, but after you act, the effect of that action will follow you whether you want it to or not. That is the law of karma. You are a free agent, but when you perform a certain act, you will reap the results of that action.' An arrow which has been shot cannot be recalled, so too your action, which automatically results in karma, good or bad, however it may be. The 6th shloka of Sahasranama is:

Aprameyah Hrishikesha Padmanabha Amaraprabhu Vishwakarma Manu Swashta Sthavishta Sthaviro Dhruvah

Lord Vishnu is indefinable as Aprameya and is Hrishikesha – the Lord of the senses in performing karmas. As Padmanabha, he is the Lord of the whole universe. In regulating individual karma, Lord Vishnu is Amaraprabhu– the lord of the immortals and Vishwakarma– the creator of the universe. He is Manu– the thinker, Swashta– the reducer, Sthavishta– the biggest, and Sthaviro Dhruvah– the old and firm. Thus, there are many ways and means by which Lord Vishnu mitigates, lessens or eradicates the fruits of our karmas. Sai Baba is Lord Vishnu. Start thinking positively, which will help the effects of past actions, rather than accepting failure with an excuse that 'it must be my karma, I can't seem to succeed in anything,' and make a greater effort.

Sai Baba gives us the wisdom to help us make the right choices in life so that we are not influenced by our samskaras. As Aprameya and Hrishikesha, He inspires us to resist our bad habits. Wisdom and discrimination help us to understand the nature of people with whom we associate and this, in turn, helps us choose with whom we should associate. Wisdom enables us to know which desires we should try to fulfil and which we should drop.

Shri Narasimha Swamiji analyses this doctrine of karma as most people never realise how bound they are by the influences of past actions. We should begin to analyse ourselves to understand why we are as we are. Some children are born with certain moods and habits. They brought these tendencies from the past, for in this life they have not yet had time to form such behaviour.

Our lives are getting increasingly complex. Vishnu Sahasranama enables us to exercise good judgement in our everyday lives so that we do not get into trouble. Vishnu Sahasranama gives the wisdom to what benefits us and the will power to follow what wisdom says.

-Dr. Vijayakumar

Courtesy: An Insight into Vishnu Sahasranama through Sai Baba

Published by: Sterling Publishers Pvt. Ltd.

to be contd...

For Daily Shirdi Darshan Latest News & Experiences of Devotees

Subscribe and Like YouTube Channel of Shri Sai Sumiran Times

https://youtube.com/@shrisaisumirantimes3022

I Just Did What Was Assigned

Om Sairam. I was working in I.I.T., Madras, as a Professor of Metallurgy and after my retirement in1997, I have settled down in Hosur bordering Karnataka. It was in 1970, then my father-in-law's brother Sri A. N. Sundar Raj, introduced me to Sri Sai Spiritual Centre and Sri Radhakrishna Swamiji. Since then, I have been blessed by Swamiji in all respects.

My son, Sriram and his wife had come down from the USA on a short visit. He had booked his return flight tickets from Madras on the morning of 26th March 2000. We had planned to visit my 90 years old mother at Mysore on 25.3.2000 and drop my son and daughter-in-law at Bangalore Railway Station to catch the Night Mail to Madras. We hired a Tata Sumo jeep from Hosur to go to Mysore for this purpose.

As per our plan, we made the trip to Mysore. My mother was happy to see the grandson and his wife. Eight of us with considerable luggage left Mysore in the afternoon for Bangalore. Even before we reached Channapatna, the rear wheel was punctured. It was replaced and as we proceeded a little distance, two more punctures occurred. It was by then pitch dark. There was no way of getting the punctures rectified. Moreover, my son was to catch the Madras-bound mail at 10 p.m. and the next day had to fly off to the USA. These punctures had ruined spirits and all our plans had come to a nought.

We fervently prayed to Sri Sai Baba and Sri Radhakrishna Swamiji. Our Guru listened to our prayers. Help came in immediately. It was indeed a miracle. Just then a jeep with only one gentleman stopped by us. On learning of our ordeal, he took all the eight of us with luggage in his jeep and dropped my son at the Bangalore Railway station. Not only that, he also dropped my father-in-law and mother-in-law in their residence at Wilson Garden, Bangalore.

The good Samaritans name was Sri Shakil Shaikh who hails from Tumkur and was on his way from Mysore to Tumkur. When thanked him profusely he just laughed at it and would not even give his address. With difficulty, I could get his telephone number at Tumkur. Subsequently I wrote a letter to Sri Shakil Shaikh and sent it to my co brother in Tumkur to locate his address through the telephone number. On contacting, Mr. Shaikh visited my co-brother's residence and when he was appreciated for the help he has rendered, he looked at Sai Baba's picture in the drawing room and said I just did what was assigned.

Indeed, Sai Baba and Swamiji helped us in the guise of Sri Shakil Shaikh on the fateful night of 25th March 2000.

-Dr. R. Vasudevan

Our Associates

Singapore
Pt. Shreedhar
U.S.A.
Anil Chadha
Dr. Rangarao Sunkara
Ohio
Varaha
Florida
Kamal Mahajan
Brampton
Devendra Malhotra
Australia
Anibha Singh
New Zealand
Anjum Talwar
Japan - Kaco Aiuchi
Bahrain
T.P. Sreedharan
Canada
Ruby Kaur, Smita Sohi
Germany
Sugandha Kohli
Dubai
Ajay Sharma
Sri Lanka
S.N. Udhayanayahan
Nepal
Vishnu Pokhrel, Madhu

Sai's Blessing Has No Limit

Om Sairam to everyone. I live in the US. Whatever I am or I have today is only because of Sai. I would like to share two experiences that happened recently.

I started having a red/itchy rash on both my hands. I applied ointments/cream/oil on it, but nothing was really helping and it was spreading. One day it got so worse that I could not bear the pain and asked Sai for help. I put Udi on the rash a few times and needless to say, that the rash was completely gone.

I would share another experience. My friend sent some money to his friend online. The money should have reached in a day or so but it was more than a week and still there was no update. He even put in a complaint online but there was no response. He was scared that maybe some online scam happened and he would lose his money. But I was fully confident that the money would not be lost. I prayed to Sai. Then the next morning itself the money was received.

Thank You Sai for everything. Please don't ever leave me alone Sai, please help me to be a better person. Om Sairam.

-Sai devotee from USA

Miracle of Sai Baba

This is the true story of Sai Miracle in Trust and Faith of Him, He is ever kind and saviour at all times.

On June 4th 2007, Anil Sahebrao Shilke, felt extremely unwell while returning home from work. Suddenly he started sweating, his throat became parched, and his abdomen was painful and bloated. The symptoms increased in severity by the minute so he went to a shop and called home. He dialed the number but he could not speak and fell on the floor unconscious. When he came to consciousness he realized that he was in the I.C.U. of Chinchvad Hospital. The doctor informed him that the blood tests and scans revealed that both his kidneys had 'shut down' so he would be on dialyses starting that day. The dialyses would continue after he was discharged every Tuesday and Friday for the rest of his life. The diagnosis and prognosis sent a chill down his spine, and he felt helpless. In desperation he prayed to Baba and said, "Baba don't give me this life of dependency on dialysis instead give me death". On the 17th he went home, and exactly a month later the 'Palki procession' would start walking from Pune to Shirdi. Anil was distraught as he had participated in the procession for the past 8 years, and he intended to walk this year also. Again he earnestly prayed to Baba saying, "Due to ill health if I can't walk this year Baba please restore my health so I can walk with the Palki next year. Baba if I can run in front of your Palki like a horse next year I promise to offer a silver horse to you with gratitude". Then he applied a little udi to his forehead and fell asleep. That night he was awoken by a loud voice that said, "Do you have no faith in my udi?" He woke his wife and asked her if she had heard the voice, she thought that he was delirious and she got worried. Then he fell asleep and this time he woke up at 5 AM, and he distinctly heard the Kakad Arati. Again he woke his wife and the whole family got up none of them heard the Arati except him. This was the turning point about 2 hours later he passed some urine. This was great as he had not passed a drop of urine for the past 15 days. His condition also improved when he visited the hospital a few days later his blood tests had improved, so he did not require dialyses. Anil improvement was rapid and sustained. He did walk to Shirdi along with his wife and friend, and he offered a silver horse to Baba as promised. Om Sai Ram.

Our Associates

Agra - Sandhya Gupta
Aligarh- Seema Gupta
Ashok Saxena, D.P. Agarwal
Ambala - Ashok Puri
Amritsar- Amandeep
Ahmedabad - Arjun Vaghela
Aurangabad-Ashok Bhanwar Patil
Assam - Bidyut Sarma
Badayun - Varinder Adhlakha
Bhilwada - Kailash Rawat
Banas - P.K.Paliwal
Bareilly - Kaushik Tandon
Sapna Santoria, Prathmesh Gupta
Bhopal
Ramesh Bagre, Surendra Patel
Bangalore-Chandrakant Jadhav
Bathinda-Govind Maheshwari
Bikaner- Deepak Sukhija
Surender Yadav, Pt. Sadhu Ji
Purnima Tankha,
Bihar- Balram Gupta
Bokaro - Hari Prakash
Bhagalpur - Anuj Singh
Bhuvneshwar (Odisha)
Pabitra Mohan Samal
Chandigarh - Puneet Verma
Chennai - M. Ganeson
Chattisgarh- Nikhil Shivhare
Dehradun - H.K. Petwal,
Akshat Nanglia, Mala Rao
Dhanaula - Pradeep Mittal
Faridabad - Nisha Chopra
Ashok Subromanium,
Firozpur - P.C. Jain
Goa - Raju
Gurgaon - Bhim Anand,
Alok Pandey, Shyam Grover
Ghaziabad - Bhavna Acharya
Usha Kohli, Dinesh Mathur
Gujarat - Paresh Patel
Gwalior - Usha Arora
Haridwar - Harish Santwani
Hissar - Yogesh Sharma
Hyderabad - Saurabh Soni,
T.R. Madhwan
Indore- Dr. R. Maheshwari
Jalandhar - Baba Lal Sai
Jabalpur - Suman Soni
Chandra Shekhar Dave
Jagraon - Naveen Khanna
Jaipur - Puneet Bhatnagar
Kolkata - Sushila Agarwal,
D. Goswami
Kapurthala - Vinay Ghai
Korba - T.P. Srivastava
Kurukshetra - Yash Arora
Pradeep Kr. Goyal
Kaithal - Naveen Malhotra
Lucknow - Gayatri Jaiswal,
Sanjay Mishra, Rajiv Mohan
Ludhiana - Umesh Bagga,
Rajender Goyal, Avinash Bhandari
Mandi Govind Garh
Shunti Bhaji, Rajiv Kapoor
Mawana - Yogesh Sehgal
Meethapur - Shrigopal Verma
Meerut - Kamla Verma
Mumbai-Anupama Deshpandey
Kirti Anurag, Sunil Thakur
Moradabad - Ashok Kapur
Mussoorie- R.S. Murthy,
Surinder Singhal
Nagpur - Pankaj Mahajan,
Srinivasan, Narendra Nashirkar
Noida - Amit Manchanda
K.M. Mathur, Kanchan Mehra,
Panipat- Raj Kumar Dabar,
Sanjay Rajpal
Patiala - P.D.Gupta,
Dr. Harinder Koushal
Panchkula - Anil Thaper
Palam Pur - Jeewan Sandel
Parwanoo - Satish Berry,
Chand Kamal Sharma
Pune - Bablu Duggal
Sapna Lalchandani
Port Blair
J.Venkataramana, Ghanshyam
Pundri - Bunty Grover
Patna - Anil Kumar Gautam
Ranchi - Deepak Kumar Soni
Rewari- Rohit Batra
Rishikesh- S.P. Agarwal,
Ashok Thapa
Raigarh - Narinder Juneja
Roorkee - Ram Arya
Rudrapur-Naresh Upadhyaye
Shirdi - Sandeep Sonawane
Nilesh Sanklecha, H.P. Sharma
Sonepat- Rahul Grover
Sangrur - Dharminder Bama,
Sirsa-Komal Bahiya, Bunty Madan
Surat - Sonu Chopra
Sirhind - Satpal ji
Udaipur - Dilip Vyas
Ujjain - Ashok Acharya
Vidisha - Sunil Khatri
Zeera - Saranjeet Kaur

साई तू पालनहार

तेरा नाम साई
तेरा ध्यान
तू रहे संग मेरे
हर पल
चाहे सुबह हो
या शाम
तू दाता
तू सरकार
साई तू भक्तों
का पालनहार
रखना सदा साई अपना बनाकर
मांगू बस बाबा यही वरदान
द्वारकामाई सुंदर दरबार
देती भक्तों को असीम प्यार
जो आ जाए चरणी तेरी
वो कभी खाली झोली न जाए दातार
शिरडी की पावन भूमि में
सजा साई तेरा सुंदर दरबार
कण-कण में तू साई विराजे
बरसाता सब पर कृपा अपार।

-संगीता ग्रोवर
गायिका, लेखिका, कवियित्री

मेरे साई

मेरे किरदार का मोल इतना कर दे साई,
तेरे बताए काम को कर सकूं।
इबादत तेरी ना सिर्फ आखों से,
पर दिल के जज़्बातों से कर सकूं।
हैं मायूस आखें, बेबस ज़ुबां इस जहां में,
गमों के मारों को मुस्कान से
आबाद कर सकूं।
मेरे किरदार का मोल
इतना कर दे मेरे मालिक,
ना केवल तेरा नाम,
तेरे काम को भी अंजाम दे सकूं।।

-श्वेता जैन

क्या अर्पण करूं

क्या अर्पण करूं
तुम्हें मैं साई,
सब कुछ तेरा
कुछ नहीं मेरा,
फिर भी अहम
ना छूटे मेरा,
धन दौलत
तुमसे पाई,
अन्न वस्त्र तुम्हारी कृपा से मिलते,
घर द्वार गाड़ी बंगला,
तुझसे मांगे झोली फैला कर,
कैसे करूं अर्पण तुमको साई,
यह तो सब तुम्हारी धरोहर,
कैसे अर्पण करूं मैं साई,
सोच मेरा मन कर दूं अर्पण,
अपने दिल को
इसमें बसते मेरे साई,
फिर बोले मेरा मन,
जिन नैनों से हो तेरा दर्शन,
दर्शन पाकर बहती जिन नैनों से अश्रुधारा,
वह नैयना तुमको अर्पण,
जिस जीव्हा से लेती तुम्हारा नाम,
ये जीव्हा करती भजन सिमरन दिन रात,
बिन सिमरे न आता मुझको आराम,
यह जीव्हा तुमको अर्पण साई,
सब कुछ तेरा कुछ नहीं मेरा,
क्या अर्पण करूं तुमको साई,
क्या अर्पण करूं तुमको मैं साई।

-किरण अरोड़ा

पुरानी चोट अथवा दर्द के इलाज हेतु तेल तथा लेप श्री साई मंदिर, एच ब्लॉक, सरोजनी नगर, नई दिल्ली से प्राप्त किया जा सकता है। सम्पर्क करें- प्रीति भाटिया फोन: 9899038181

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी व सम्पादक अंजु टंडन ने रेव स्कैन्स प्रा.लि., ए-27, नारायणा इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली से छपवा कर एफ-44-डी, एम. आई.जी. फ्लैटस, जी-8 एरिया, हरि नगर, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित किया। RNI No. DELBIL/2005/16236

श्री नारायण धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा मेडीकल कैंप में साधु-संतों का निशुल्क इलाज

हरिद्वार: शाही शहर पटियाला की समाज सेवी संस्थाऐं अपने सेवा कार्य सिर्फ पटियाला में ही नहीं करती, पटियाला के बाहर भी इन संस्थाओं की तरफ से बड़े स्तर पर सेवा कार्य किए जा रहे हैं। धार्मिक नगरी हरिद्वार में 'पटियाला वालों की धर्मशाला' का संचालन करने वाले श्री नारायण धर्मार्थ ट्रस्ट की तरफ से इस धर्मशाला में विशेष मैडीकल चैकअप कैंप का आयोजन किया गया, जिसमें हरिद्वार में रह रहे 100 से अधिक साधु संतों का मेडीकल चैकअप करवाया गया।

ट्रस्ट के प्रधान धीरज चलाना के नेतृत्व में आयोजित इस कैंप में मेडीसन के एम. डी. डा. वशिष्ट की टीम की तरफ से साधु संतों का चैकअप किया और उनको मुफ्त दवाइयां दी। कैंप का उद्घाटन इस ट्रस्टी के पैटर्न पी.डी. गुप्ता की तरफ से किया गया।

इस मौके पर दवाइयों की सेवा डा. ए.आर. गर्ग की तरफ से दी गई। इस बारे में जानकारी देते हुए ट्रस्ट के प्रधान धीरज चलाना ने बताया कि इसमें धर्मशाला के सभी सदस्य मौजूद थे। उन्होंने कहा कि हरिद्वार के साधु संतों ने इस आयोजन के लिए ट्रस्ट को आशीषें दीं। इस मौके पर विशेष तौर पर अश्विनी खन्ना, राजीव कुमार, विमल कुमार, जोगी राम, अविनाश गौड़, राकेश मल्होत्रा, मोहित गर्ग, गिरिश बांसल, अश्विनी गुप्ता, सी.ए. संजय गोयल, धर्मपाल, दिनेश शर्मा, दिव्या शर्मा, योगेश कुमार, राजीव बांसल, सुभाष गुप्ता, राजेश नोहरिया, योगेश्वर कुमारी के अलावा बड़ी संख्या में ट्रस्ट के सदस्य उपस्थित थे।

भाऊ राजाराम अंबिका का स्थानान्तरण

भाऊ राजाराम अंबिका सतारा ज़िला, बडुज के निवासी थे। वे प्राथमिक स्वास्थ्य विभाग और रोग-क्षमताकरण केन्द्र में कार्यरत थे। एक दिन उन्हें अपने विभाग से नासिक ज़िला में स्थानान्तरण का आदेश मिला। क्योंकि उन दिनों यातायात के सीमित साधन थे, इसलिए भाऊ इस तबादले से अप्रसन्न थे। कार्यस्थल की दूरी और घोड़े द्वारा यात्रा करना भाऊ के लिए असुविधाजनक था। अंग्रेज़ अफसर से स्थानान्तरण को रोकने या किसी निकट स्थान पर बदली करने की प्रार्थना करना व्यर्थ था क्योंकि वहां सुनवाई की कोई संभावना नहीं थी। भाऊ असमंजस की स्थिति में थे। उन्हें कोई समाधान नहीं सूझ रहा था। उन्हीं दिनों उन्होंने बाबा की दिव्यता और परोपकारिता की अद्भुत लीलाओं का श्रवण किया। भाऊ ने अब शिरडी जाने का निश्चय किया। भाऊ ने बाबा को अपनी सारी समस्या बताकर उन्हें दो पैसे दक्षिणा देने और समस्या का समाधान पाकर वापस आने का विचार किया।

शिरडी पहुंचकर जैसे ही उन्होंने द्वारका माई में प्रवेश किया तो बाबा को एक कोने में बैठे देखा। उनके सामने एक कोलंबा रखा था, जिसमें कोई भाकरी के टुकड़े रख गया था। बाबा संकर जाति के दो कुत्तों के साथ संतोषपूर्वक भाकरी ग्रहण कर रहे थे। भाऊ यह देखकर हक्के-बक्के रह गए और उन्होंने सोचा-'लोग इन्हें महान संत मानकर इनका आदर करते हैं और ये इन निकृष्ट कुत्तों के साथ भोजन ग्रहण कर रहे हैं। अब जब मैं यहां आ ही गया हूं तो प्रणाम करके वापस चला जाऊँगा।'

बाबा मुड़े और भाऊ को देखकर बोले- 'मुझे तुरंत मेरे दो पैसे दो।' जब भाऊ बाबा को दो पैसे दे रहे थे तो वे सोचने लगे 'वास्तव में बाबा महान संत हैं क्योंकि वे सर्वव्यापी हैं और उन्होंने अपनी अद्भुत अंतर्यामिता की दिव्य शक्ति से जान लिया कि मैंने बडुज से प्रस्थान करने से पूर्व उन्हें दो पैसे दक्षिणा देने का प्रण किया था।' बाबा ने भाऊ के मन में उठने वाले विचारों को मानो स्पष्ट सुन लिया और उत्तर में बोले- 'मैं चाहे एक महान संत हूं या निकृष्ट कुत्तों के साथ भाकरी के टुकड़े ग्रहण करूं, तुम्हें इससे क्या? तुम दर्शन के लिए आए और तुमने दर्शन किया। लो, यह भाकरी का टुकड़ा और जाओ।' बाबा ने ऐसा कहकर कोलंबा में से भाकरी का टुकड़ा उठाकर भाऊ की ओर फेंका। भाऊ ने बाबा से पूछा- 'मैं पुन: आपके दर्शन के लिए कब आऊँ?' बाबा बोले- 'तुम दुबारा क्यों आना चाहते हो? तुम जो भी दर्शन करना चाहते हो, अभी कर लो।'

भाऊ के पास चुनाव का मौका नहीं था इसलिए उन्हें वहां से जाना पड़ा। वापस जाते हुए वे सोचने लगे कि बाबा ने उन्हें वापस आने के लिए क्यों नहीं कहा। कार्यालय पहुंचने पर उन्हें पता चला कि नासिक स्थानान्तरण के आदेश रद्द कर दिए गए थे और उन्हें तुरंत बडुज जाने का आदेश मिला था।

तब उन्हें बाबा के शब्द 'तुम दोबारा क्यों आना चाहते हो' का अर्थ समझ में आया, क्योंकि बाबा ने पहले ही उनकी इच्छा पूर्ण कर दी थी। भाऊ अपनी शिरडी यात्रा की तिथि नहीं बता पाए।

बाबा अंतर्यामी हैं। वे जानते थे कि भाऊ किस कारण से शिरडी आए थे। बाबा सर्वव्यापी हैं। वे संकर जाति के निकृष्ट कुत्तों में भी निवास करते हैं। बाबा सर्वशक्तिमान हैं। उन्होंने भाऊ के स्थानान्तरण के आदेश को रद्द कर दिया।

वे ही डर (भय) हैं, डर (भय) का कारण हैं और डर (भय) का नाश करने वाले हैं। इसलिए वे 'भूतकुर्त भयनाशना' कहे जाते हैं। वे हर घटना-क्रम के ज्ञाता हैं और वे ही उसका कारण हैं, वे ही घटना का कर्म और फल हैं।

-डा. रबिन्द्रनाथ ककरिया
(जानकारी देने वाले-शशिकान्त पी. अंबिका)
आभार: करूणासागर साई

शिरडी डायरी

श्रीगणेश श्रीकृष्ण खापर्डे ने शिरडी में अपनी दिनचर्या डायरी में लिखी। प्रस्तुत हैं उसी डायरी से कुछ अंश:

12 जनवरी, 1912: मैं सुबह जल्दी उठ गया, प्रार्थना की और सामान्य दिनचर्या शुरू की, जब नारायणराव के पुत्र गोविंद और भाई भाऊसाहेब आए। वे कुछ समय पहले हौशंगाबाद से अमरावती पहुंचे थे और मुझे व मेरी पत्नी को वहां न पाकर हमसे मिलने यहां चले आए। स्वाभाविक ही है, कि हम लोग एक दूसरे को देखकर बहुत प्रसन्न हुए और बातचीत करने बैठे। हमने योग वशिष्ठ का पाठ थोड़ी देर में शुरू किया क्योंकि बापू साहेब जोग व्यस्त थे। हमने साई महाराज के बाहर जाते हुए और फिर मस्जिद लौटने के बाद दर्शन किए। वे बहुत ही कृपालु थे और उन्होंने बार-बार मुझे अपनी चिलम से धुम्रपान करने दिया। इससे मेरे बहुत सारे संशय मिट गए और मैं आनंदित हो उठा। दोपहर की आरती के बाद हमने भोज किया और कुछ देर आराम किया। दीक्षित को मस्जिद में सामान्य से अधिक देर हो गई। इसीलिए उन्होंने रामायण पढ़ना और दिनों से देर में शुरू किया और हम लोग एक अध्याय भी पूरा न कर सके क्योंकि वह लंबा और कठिन, दोनों था। फिर हमने साई महाराज के मस्जिद में दर्शन किए। वहां संगीत का आयोजन था। वहां दो नाचने वाली लड़कियां आई थीं, जिन्होंने गाना गाया और नाच किया। बाद में शेज आरती हुई। साई महाराज बलवंत के प्रति बहुत दयालु थे, उन्होंने उसे बुलवा भेजा और पूरी दोपहर उनके साथ बिताने दी।

किसी से न रूठें

दो भाई परस्पर बड़े ही स्नेह तथा सद्भावपूर्वक रहते थे। दोनों भाई जब भी कोई वस्तु लाते तो एक दूसरे के परिवार के लिए भी अवश्य ही लाते। छोटा भाई भी सदा उनको आदर तथा सम्मान की दृष्टि से देखता। एक दिन किसी बात पर दोनों में कहा सुनी हो गई। बात इतनी बढ़ गई कि छोटे भाई ने बड़े भाई के प्रति अपशब्द कह दिए। बस फिर क्या था, दोनों के रिश्तों के बीच दरार पड़ गई। उस दिन से ही दोनों अलग-अलग रहने लगे और दोनों के बीच बोलचाल भी बंद हो गई।

इसी तरह कई वर्ष बीत गये। मार्ग में जब दोनों आमने सामने भी पड़ जाते तो कतरा कर दृष्टि बचा जाते। कुछ वर्षों बाद छोटे भाई की कन्या का विवाह आया। उसने सोचा बड़े आखिर बड़े ही होते हैं, जाकर मना लाना चाहिए, अब ऐसी भी क्या नाराज़गी।

वह बड़े भाई के पास गया और पैरों में पड़कर पिछली बातों के लिए क्षमा माँगने लगा। बोला, अब चलिए और विवाह कार्य संभालिए। पर बड़ा भाई न पसीजा, उसने घर चलने से साफ मना कर दिया। छोटे भाई को बहुत दु:ख हुआ। अब वह इसी चिंता में रहने लगा कि कैसे भाई को मनाया जाए। इधर विवाह के भी बहुत ही थोड़े दिन रह गये थे। बाकी सगे संबंधी आने लगे थे।

एक सम्बन्धी ने बताया, तुम्हारा बड़ा भाई एक संत के पास प्रतिदिन जाता है। उनका बहुत आदर भी करता है और कहना भी मानता है। छोटा भाई उन संत के पास पहुँचा और पिछली सारी बातें बताते हुए अपनी गलती के लिए क्षमा याचना की तथा गहरा पश्चात्ताप व्यक्त किया। प्रार्थना की, आप किसी भी तरह मेरे भाई को मेरे यहाँ आने के लिए राज़ी कर दें। दूसरे दिन जब बड़ा भाई सत्संग में गया तो संत ने उससे पूछा, क्या तुम्हारे छोटे भाई के यहाँ कन्या का विवाह है? तुम क्या-क्या काम संभाल रहे हो? तब उसने कहा- मैं तो विवाह में सम्मिलित ही नहीं हो रहा गुरुदेव। कुछ वर्ष पूर्व मेरे छोटे भाई ने मुझे ऐसे कड़वे वचन कहे थे, जो आज भी मेरे हृदय में काँटे की तरह खटक रहे हैं। संत जी ने कहा, 'सत्संग के बाद मुझसे मिल कर जाना, ज़रूरी काम है।' सत्संग समाप्त होने पर वह संत के पास पहुँचा तब उन्होंने पूछा, मैंने गत रविवार को जो प्रवचन दिया था उसमें मैंने क्या कहा था, ज़रा याद करके बताओ? अब बड़ा भाई बिलकुल मौन! काफी देर सोचने के बाद हाथ जोड़ कर बोला, क्षमा चाहता हूँ गुरुदेव, आपने प्रवचन तो बहुत बढ़िया दिया था, पर कुछ याद नहीं आ रहा कि आपने क्या-क्या कहा था? संत बोले, देखा, मेरी बताई हुई अच्छी बातें तो तुम्हें आठ दिन भी याद न रहीं और छोटे भाई के कड़वे बोल जो की वर्षों पहले कहे गये थे, वे तुम्हें अभी तक हृदय में चुभ रहे हैं। जब तुम अच्छी बातों को याद ही नहीं रख सकते, तब उन्हें जीवन में कैसे उतारोगे और जब जीवन नहीं सुधारा तब सत्सग में आने का लाभ ही क्या रहा? अत: कल से यहाँ मत आया करो, बेकार अपना समय व्यर्थ करने से क्या लाभ। अब बड़े भाई की आँखें खुली। उसने आत्म-चिंतन किया और स्वीकार किया कि मैं वास्तव में ही गलत मार्ग पर हूँ। उसके बाद वह अपने छोटे भाई के घर गया और उसे अपने गले से लगा लिया। अब दोनों भाईयों के आँखों में खुशी के आँसू थे। हमारे साथ भी कई बार ऐसा होता है। अक्सर दूसरों की कही किसी बात का हम बुरा मान जाते हैं और फिर अकारण उनसे दूरी बना लेते हैं। जबकि हमें चाहिए कि हम आपसी बातचीत से मन में उपजी कटुता को भुलाकर सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाऐं। न स्वयं किसी से रूठें, न किसी को रूठने का मौका दें। खुश रहें, स्वस्थ रहें। **संकलन- घनश्याम बावरा**

किसी भी विज्ञापन पर अमल करने से पहले उसकी सत्यता की जांच स्वयं कर लें। प्रकाशक व सम्पादक इसकी प्रमाणिकता के लिए किसी तरह से ज़िम्मेदार नहीं होंगे। विज्ञापन एवं लेखकों की राय से सम्पादकीय का सहमत होना अनिवार्य नहीं।

साई सबके सूत्रधार

साई हमेशा कहते थे, 'मेरा भक्त चाहे एक हज़ार कोस की दूरी पर ही क्यों न हो, वह शिरडी में ऐसा खिंचा चला आता है, जैसे धागे से बंधी हुई चिड़ियां खिंचकर स्वयं ही आ जाती हैं।' इस कथन को स्वयं कहने के सर्वश्रेष्ठ अधिकारी हैं साई। वे सच्चे अर्थों में सद्गुरू कहलाने योग्य हैं। कण-कण के ज्ञाता हैं। वे नश्वर जीवन का बोध कराने वाले हैं। जो शाश्वत है, उसकी झलक दिखाने वाले भी वे ही हैं।

यही कारण है कि उनके शरीर में रहते भी सैंकड़ों मील और चारों दिशाओं से उनकी सुगंध पाते ही लोग साधन, सुविधाओं और सामर्थ्य का ध्यान रखे बगैर सीधे शिरडी का रूख करते थे। यह सिलसिला उनके देह त्यागने के बाद कई गुना बढ़ता गया है। उनकी शाश्वत सुगंध अब भी हवाओं में ताज़ा है। वे अब भी हमें आत्मबोध कराते हैं। वे संसार में भी साथ हैं और संन्यास में भी। इसलिए मैं उन्हें एक सच्चे संपूर्ण सद्गुरू के रूप में सदैव स्मरण करता हूं।

लाला लक्ष्मीचंद मुंबई के वेंकटेश्वर प्रेस में कर्मचारी थे। यह नौकरी छोड़कर वे रेल विभाग में आए और फिर मेसर्स रैली ब्रदर्स एण्ड कंपनी में मुंशी का काम करने लगे। 1910 में उनका संपर्क साई से हुआ। क्रिसमस के एक-दो महीने पहले का वाक्या है, सांताक्रूज में सपने में उन्होंने एक दाढ़ी वाले वृद्ध को देखा। चारों ओर से भक्तों से घिरी एक आध्यात्मिक विभूति। कुछ ही दिनों बाद संयोग से वे दत्तात्रेय मंजूनाथ बिजूर के यहां दासगणु का कीर्तन सुनने गए। दासगणु का यह नियम था कि वे कीर्तन करते समय श्रोताओं के सामने साई बाबा का चित्र अवश्य रख लिया करते थे। लक्ष्मीलचंद जब कीर्तन में पहुंचे तो उनकी निगाह इसी चित्र पर जा टिकी। उन्हें वह सपना याद आ गया। तस्वीर में हूबहू वही चेहरा था, जो उन्हें सपने में दिखाई दिया था। दासगणु के मधुर एवं भावपूर्ण भजनों में वे इस कदर डूबे कि शिरडी जाने का निश्चय कर लिया।

संयोग भी तुरंत ही बना। यह इस बात का सबूत है कि अगर भीतर प्यास प्रबल है तो पानी भी अपना रास्ता आपकी तरफ बनाना शुरू कर देता है। लक्ष्मीचंद शिरडी जाने के भाव से घर लौटे तो उसी रात करीब आठ बजे किसी ने उनके घर दस्तक दी। यह थे उनके परम मित्र शंकरराव। आते ही उन्होंने पूछा कि क्या हमारे साथ शिरडी चलेंगे? लक्ष्मीचंद खुश तो बहुत हुए लेकिन इससे ज़्यादा चौंके भी। उन्हें यह अजीब लगा। पहले सपना। फिर तस्वीर में सपने की तस्दीक कि वह प्रभावशाली वृद्ध कोई और नहीं स्वयं साई ही हैं और अभी कुछ देर पहले ही शिरडी जाने का विचार किया और दरवाज़े पर दस्तक हो गई।

एक मारवाड़ी से उन्होंने पंद्रह रूपये उधार लेकर शिरडी जाने का शुभ कार्य सबसे पहले पूरा करने का फैसला किया। रेलगाड़ी में बैठे तो अपने मित्र के साथ कुछ देर भजन भी किया। उसी डिब्बे में चार मुस्लिम भी थे, जो शिरडी के आसपास अपने गांवों को लौट रहे थे। लक्ष्मीचंद पहली दफा शिरडी जा रहे थे। जिज्ञासा से भरे हुए थे। उन्होंने उन सहयात्रियों से साई के बारे में पूछताछ शुरू की। लोगों ने उन्हें बताया कि साई बाबा शिरडी में कई सालों से रह रहे हैं। वे एक पहुंचे हुए संत हैं। कोपरगांव पहुंचे तो भेंट के लिए बाबा को कुछ अमरूद देने का मन बनाया। लेकिन आसपास की खुशगवार आबोहवा में ऐसे मस्त हुए कि अमरूद का ख्याल ही नहीं आया। शिरडी के पास आए तो बाबा की भेंट का ध्यान आया। इसी बीच उन्होंने देखा कि एक वृद्ध महिला टोकरी में अमरूद लिए तांगे के पीछे-पीछे दौड़ती आ रही है। लक्ष्मीचंद ने फौरन तांगा रूकवाया। कुछ उम्दा अमरूद छांटकर खरीद लिए। वह वृद्धा उनसे कहने लगी, 'कृपा करके ये शेष अमरूद भी मेरी ओर से बाबा को भेंट कर देना।'

साई के प्रति उसकी भक्ति भावना से वे बड़े ही चकित हुए, लेकिन यह भी ध्यान आया कि भेंट के लिए अमरूद लेना वे कोपरगांव में भूल गए थे। लेकिन यह महिला किस तरह दौड़ती हुई तांगे के पीछे आई और उन्हें अमरूद की याद दिलाई। लक्ष्मीचंद यही सोचते हुए आगे बड़े कि सपने में जिस वृद्ध को देखा था, संभव है यह महिला उन्हीं की कोई संबंधी हो। शिरडी के पास आते ही उन्हें मस्जिद पर फहराती पताकाएं दिखाई दी। दूर से प्रणाम किया। पूजन-सामग्री लेकर मस्जिद में दाखिल हुए। बाबा का विधिपूर्वक पूजन किया। हृदय भावों से भर गया। ऐसा लगा मानों कोई बड़ा लक्ष्य हासिल हो गया हो। दर्शन के बाद इतने आनंदित हुए कि बाबा के चरणों में गिर गए।

बाबा ने उनसे जो कहा, यह ध्यान देने योग्य है। उनके शब्दों पर गौर कीजिए। बाबा कह रहे हैं, 'साले। रास्ते में भजन करते और दूसरे आदमी से पूछते। दूसरे से क्या पूछना? सब कुछ अपनी आंखों से देखना। काहे को दूसरे आदमी से पूछना? सपना क्या झूठा है या सच्चा? कर लो अपना विचार आप। मारवाड़ी से उधार लेने की क्या ज़रूरत थी? हुई क्या मुराद पूरी?'

लक्ष्मीचंद उन्हें अपलक निहार रहे थे। चकित। अचंभित। हतप्रभ। आंखों से आंसू बह रहे होंगे। हाथ जोड़े सामने खड़े होंगे। बाबा ने कहा कि अपनी आंखों से देखना, दूसरों से क्या पूछना। अब आंखों के सामने बाबा स्वयं थे। प्यार भरी फटकार लगा रहे थे। इस अधिकार से जैसे जन्मों का रिश्ता हो। जैसे कोई पिता अपने पुत्र को सबक सिखाए। चेताए। कुछ गुस्सा होकर। कुछ प्रेम से लक्ष्मीचंद की आंखों में वह सपना भी तैर गया होगा। कानों में दासगणु का कीर्तन भी गूंज गया होगा। रास्ते की हर बात याद आई होगी। बाबा से कुछ नहीं छिपा था। बाबा के साथ यह संवाद वे जीवन में कभी भूले नहीं होंगे।

दोपहर बाद। लक्ष्मीचंद भोजन के लिए बैठे। एक भक्त ने उन्हें सांजे का प्रसाद लाकर दिया। इससे वे बड़े ही प्रसन्न हुए। दूसरे दिन भी वे सांजे की उम्मीद लगाए रहे, लेकिन किसी ने यह प्रसाद नहीं दिया। तीसरे दिन दोपहर की आरती पर बापू साहेब जोग ने बाबा से पूछा कि नैवेद्य के लिए क्या बनाया जाए? तब बाबा ने उनसे सांजा लाने को कहा। भक्तगण दो बड़े बर्तनों में सांजा ले आए। लक्ष्मीचंद भूखे थे। उनकी पीठ में भी दर्द था। बाबा फिर लक्ष्मीचंद से मुखातिब हुए, 'तुमको भूख लगी है, अच्छा हुआ। कमर में भी दर्द है। लो अब सांजे की ही करो दवा।'

लक्ष्मीचंद की इस यादगार यात्रा में यह दूसरा मौका था, जब बाबा उनके मन की हलचल को उनके सामने ज़ाहिर कर रहे थे। भूख, प्यास और दर्द भूलकर वे एक बार नम आंखों से बाबा को अपलक निहार रहे थे।

इसी यात्रा के दौरान एक बार उन्हें चावड़ी के जुलूस दर्शन का अवसर मिला। उस दिन बाबा कफ से पीड़ित थे। उन्हें विचार आया कि इस तकलीफ की वजह शायद किसी की नज़र हो। दूसरे दिन सुबह जब बाबा मस्जिद गए तो शामा से कहने लगे, 'कल जो मुझे कफ की पीड़ा हो रही थी, उसका मुख्य कारण किसी की कुदृष्टि ही है। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि किसी की नज़र लग गई है। इसीलिए यह पीड़ा मुझे हुई है।' ठीक यही विचार वहां मौजूद लक्ष्मीचंद के मन में उठ रहे थे कि बाबा को किसी की नज़र न लगी हो।

लक्ष्मीचंद के लिए यह तीसरा मौका था। बाबा भी गज़ब कर रहे थे। अब तक ऐसा प्रसंग कम ही आया कि किसी भक्त को बार-बार इस तरह अपनी लीलाऐं दिखा रहे हों। भाव-विभोर लक्ष्मीचंद ने एक ही यात्रा में बाबा की अपार कृपा जिस तरह प्राप्त कीं, यह भी एक दुर्लभ उदाहरण है। वे भरे मन से बाबा के चरणों में गिरकर कहने लगे, 'आपकी झलक देखकर मेरा मन प्रसन्ता से भर गया। आपके अलावा भी कोई ईश्वर है, यह मैं नहीं जानता। मुझ पर आप सदा दया और स्नेह करें। अपने चरणों के दीन दास की रक्षा कर उसका कल्याण करें। आपके भव भयनाशक चरणों का स्मरण करते हुए मेरा जीवन आनंद से व्यतीत हो जाए, यह मेरी विनम्र प्रार्थना है।'

बाबा ने मुस्कराकर उनकी बात सुनी। आशीर्वाद दिया। उदि प्रदान की। लक्ष्मीचंद के जीवन में यह यात्रा अविस्मरणीय रही। वे इसके बाद शिरडी जाने वालों के हाथ बाबा को हार, कपूर और दक्षिणा भेजा ही करते थे। **-डा. राजेश पी. माहेश्वरी**

आभार: शिरडी के साई सबके पैगम्बर

गौंडा में नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

गौंडा: श्री हरी नारायण साई मंदिर चैरिटेबल ट्रस्ट, गौंडा द्वारा हरि नारायण सावित्री देवी मिनी चैरिटेबल क्लीनिक (नि:शुल्क चिकित्सालय) में रविवार को नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉक्टर रश्मि वर्मा, सी.एम.ओ. गोंडा, ने किया। शिविर का समापन सी.एम.ओ. श्रावस्ती डॉक्टर ए.पी. सिंह ने किया। समारोह के विशिष्ट अतिथि उपआयुक्त खाद्य देवी पाटन मंडल गोंडा श्री एस.के. सिंह रहे। समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ अधिवक्ता श्रीमान सिंह ने की। मंच संचालन डॉ. ओंकार पाठक ने तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राजेश श्रीवास्तव ने दिया। इस शिविर में मेदांता हॉस्पिटल लखनऊ के हृदय रोग विशेषज्ञ डॉक्टर अनुराग मिश्रा, पेट रोग विशेषज्ञ डॉक्टर सूर्यकांत मिश्रा तथा उनके साथ आए स्टाफ ने करीब 75 मरीज़ों का परीक्षण कर उन्हें परामर्श दिया। अतिथियों को श्री हरी नारायण साई मंदिर चैरिटेबल ट्रस्ट, गौंडा के मुख्य ट्रस्टी संजय जयसवाल, अभिषेक जयसवाल, संजीता जयसवाल, अमन जयसवाल, रजत जयसवाल व के.

एल. भारद्वाज ने शॉल तथा चांदी का राम दरबार भेंटकर सम्मानित किया। इस मौके पर डॉक्टर अतुल मिश्रा, डॉक्टर फारूक समीर, डॉक्टर आशा पाठक, छात्रसंघ अध्यक्ष उमेश शुक्ला, एडवोकेट वेद प्रकाश तिवारी, प्रमोद नंदन श्रीवास्तव, अजय विक्रम सिंह, डॉ. जी.सी. श्रीवस्तव, नीलम श्रीवस्तव श्री बब्बू मिश्रा प्रधान सहायक के.जी.एम.सी. लखनऊ आदि मौजूद रहे। इस क्लीनिक पर विशेषज्ञ डॉक्टरों द्वारा मरीजों को नि:शुल्क चिकित्सा परामर्श प्रदान किया जाता है एवं संस्था द्वारा संचालित मेडिकल स्टोर पर दवाइयाँ भी सेवा रेट पर उपलब्ध कराई जाती हैं। **-गायत्री जयसवाल,** लखनऊ

श्रीराम मंदिर हरि नगर में साई भजन

दिल्ली: हर महीने की भांति इस महिने भी दिनांक 26 मई को श्री राम मंदिर, हरि नगर में मासिक साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। सांय 6:30 बजे से रात 9:00 बजे तक भजनों का गुणगान किया गया। सभी गायकों ने बहुत मधुर भजन गाए और ढोलक पर मास्टर नरेश जी ने उनका साथ दिया। सभी भक्तों ने उनके भजनों का बहुत आनंद लिया। अंत में मंदिर के पंडित जी द्वारा बाबा की आरती की गई और सभी भक्तों को मठियां और रूअफज़ा शर्बत प्रसाद स्वरूप दिये गये। कार्यक्रम का आयोजन राजेन्द्र सचदेवा जी द्वारा भक्तों के सहयोग से किया गया। **-राजेन्द्र सचदेवा**

श्री सैन जी महाराज की जयंती

दिल्ली: दिनांक 5 मई 2024 को संत शिरोमणि श्री सैन जी महाराज की 724वीं सैन जयंती हर्षोल्लास के साथ मनायी गई। कार्यक्रम का आयोजन सेन भगत शिव मंदिर, नारायणी धाम, हरी नगर में बड़े धूमधाम से किया गया। प्रात: 9 बजे हवन किया गया। उसके बाद हरि नगर क्षेत्र में कलश यात्रा निकाली गई। दोपहर 1 बजे सभी ने भंडारा प्रसाद ग्रहण किया। निस्वार्थ सेवादारों की टीम ने अपनी सेवाऐं दी। कार्यक्रम का आयोजन चेयरमैन मुकेश कुमार सैन, प्रधान श्री खेमचंद बदलियां सैन, अशोक कालोनियां जी, महावीर जी, जितेंद्र, जीतू, विनोद कुमार, विजय कुमार, अजय कुमार, निर्मला देवी जी और डबास जी द्वारा किया गया। **-गुरबचन सिंह**

सद्गुरू साईनाथ भगवान

शास्त्रों को पढ़ हम ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास तो कर सकते हैं किंतु आत्मिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान तो हमें केवल और केवल सदगुरू ही दे सकते हैं। बाबा जी ने दासगणु जी को उपनिषदों में आई कठिनाइयों का समाधान बताया, नाना साहेब चांदोरकर जी को गीता के एक एक श्लोक का अर्थ समझाया एवं काकासाहेब दीक्षित् को नवनाथों की भक्ति का अर्थ समझाया, जिसका सार केवल और केवल यही है कि विशेष भक्ति की कोई भी आवश्यकता नहीं है, केवल गुरु को नमन एवं सद्गुरू साईनाथ का पूजन ही पर्याप्त है। जय साईनाथ भगवान। **-सुरेन्द्र सक्सैना बंधु**

प्रतियोगिता नम्बर 223

नीचे लिखी पंक्तियां श्री साई सच्चरित्र से ली गई हैं, आपको बताना है कि ये कौन से अध्याय से हैं। सही जवाब भेजने वाले को मिलेगा इनाम। अपने जवाब हमें 9818023070 पर whatsapp करें या saisumirantimes@gmail.com पर ई-मेल करें। अपना पता व फोन नंबर भी अवश्य लिखें। इनाम केवल श्री साई सुमिरन टाइम्स के Subscribers को ही दिये जायेंगे।

1. 'तुम आजकल क्या कर रहे हो?' देव ने उत्तर दिया कि, 'कुछ भी नहीं।' तब बाबा ने कहा, 'प्रतिदिन पोथी (ज्ञानेश्वरी) का पाठ किया करो।'
2. तुम लोगों को यह लेन-देन अच्छा नहीं लगा, इसलिये मैंने उन बकरों को गड़रिये को वापस कर दिया।

पुरस्कार- कंचन सी.एम. मेहरा के सौजन्य से शिरडी आने जाने की स्लीपर क्लास की दो टिकटें। शिरडी टिकट तीन महीने तक ही मान्य है। साई माऊली ट्रस्ट राजपार्क के सौजन्य से बाबा के वस्त्र।

पिछले माह की प्रतियोगिता के सही उत्तर: 1. अध्याय 36 2. अध्याय 21

सही जवाब भेज कर शिरडी यात्रा की 2 टिकटों (स्लीपर क्लास) का इनाम जीता है सिरसा, हरियाणा से कविता अरोड ने और अन्य ईनाम जीता है द्वारका, दिल्ली से इंदु बाला ने। आपको जल्द ही ईनाम भेजे जायेंगे। हमारा पता है: श्री साई सुमिरन टाइम्स, F-44-D, MIG Flats, G-8 Area, Hari Nagar, New Delhi - 64.

साई धाम मंदिर
उप्पल साउथएण्ड कालोनी सैक्टर-49, गुरूग्राम में शुभ कार्यों के लिए 2 हाल एवं 5 कमरे उपलब्ध हैं।
सम्पर्क करें:
श्री अरूण मिश्रा
फोन: 9350858495, 0124-2230021

सम्पादन मण्डल

मुख्य संरक्षक -सी.एल. टिक्कू, स्वामी बलदेव भारती, राकेश जुनेजा, मोती लाल गुप्ता, सुमित पोंदा, सर्वेन्टस ऑफ शिरडी साई,
मुख्य सलाहकार -स्वामी सत्यानंद महाराज, संदीप सोनवणे, सुरेन्द्र सक्सेना, भरत मेहता, अशोक सक्सैना, सुनील नागपाल, नीरज कुमार, जी.आर. नंदा, अशोक खन्ना, एस.के. सुखीजा, मुकुल नाग, अशोक सोही, मंजु बवेजा
सलाहकार -महेन्द्र दादू, भीम आनंद, मीता साई, के.बी. शर्मा, के.सी. गुप्ता, नरेश मदान, अमित माथुर, सचिन जैन, सुरेन्द्र सेठी, संदीप अरोड़ा
विशेष सहयोग -अमित सरीन, महेन्द्र शर्मा
सम्पादक -अंजु टंडन
सह सम्पादक -शिवम चोपड़ा
उप सम्पादक -मीनू सलूजा,
डिज़ाइनर -गायत्री सिंह
कानूनी सलाहकार -प्रेमेन्द्र ओझा
सहयोगी -राजेन्द्र सचदेवा, कृष्णा पुरी, पूनम धवन, ज्योति राजन, मीरा, कंचन मेहरा, मीनू सिंगला, साईना पुरी, दिनेश चन्द माथुर, मंजीत, अंजली, सुनीता सग्गी, ओंकारनाथ अस्थाना, विवेक चोपड़ा, आंचल मारवा, संजय उप्पल, विशाल भाटिया, सुषमा ग्रोवर, उषा अरोड़ा, योगेश शर्मा, किरण, शैली सिंह, उषा कोहली, रूपलाल अहूजा, राजीव भाटिया, प्रेम गुलाटी, योगेश बहल, सीमा मेहता, वर्षा शर्मा, नीलम खेमका।

-प्रशासनिक कार्यालय-
F-44-D, MIG Flats, G-8 Area, Hari Nagar,
New Delhi -110064, Ph- 9818023070, 9212395615
(सभी पद अवैतनिक हैं)

Publication date- 5th June 2024, Posting date- 9th/10th June 2024, Place of posting- Naraina

India's First International University offering
Liberal Education in Arts, Sciences, Technology and Law

www.saiuniversity.edu.in

SAI UNIVERSITY

Sai University (SaiU) Chennai, a state private university in Tamil Nadu, offers a variety of multidisciplinary higher education programs in arts and sciences, technology, and law. The university is led by Mr. K.V. Ramani (Founder and Chancellor) and Prof. Jamshed Bharucha (Vice Chancellor), aiming to set international standards in Indian higher education.

Recognized by University Grants Commission (UGC)

Approved by Bar Council of India

SaiU Undergraduate and Postgraduate Programs (Dayscholar and Residential options available.)

ARTS AND SCIENCES

B.A. (Hons.)
- Economics
- Literature
- Politics, Philosophy, Economics (PPE)
- Psychology, Philosophy (PP)
- Literature, Communication, Creative Expression, Cultural Studies (LCCC)
- Economics and International Relations (EIR)

B.Sc. (Hons.)
- Physics
- Cognitive Neuroscience
- Biological Sciences
- Psychology
- Computer Science
- Mathematics

COMPUTING AND DATA SCIENCE

B.Tech. (4 Years)
- Computer Science
- Data Science
- Computing and Data Science

LAW

B.A. LL.B. (Hons.) (5 Years)

LL.M. in Regulation and Governance (1 Year)

PG Diploma in Technology, Law and Policy (Daksha Fellowship) (1 Year)

M.A. in Public Policy (2 Year)

- Curriculum with Liberal Education
- Interdisciplinary and Multidisciplinary Studies
- Stellar Governing Board
- Partnerships with International Universities
- Distinguished Global and Indian Faculty
- Student Engagement with Worldwide Academics
- Strong Industry Connections
- Internships and Placements Opportunities

Stellar Board Members

Sai University is governed by a board of members from diverse backgrounds, including Padma awardees such as Mr. N. R. Narayana Murthy (Infosys), Justice M.N. Venkatachaliah (Former Chief Justice of India), Dr. Anil Kakodkar (Atomic Energy Commission of India), Advocate Sriram Panchu (Madras High Court), and other esteemed leaders.

Eminent Faculty

The faculty team at Sai University is headed by Prof. Jamshed Bharucha. The team is guided by the renowned Stellar International Advisory Board, which includes esteemed academics from Tufts University, Warwick University, Stanford University, Georgia State University, and other prestigious institutions.

+91 91500 75661, 62, 63

apply.saiuniversity.edu.in

admissions@saiuniversity.edu.in

Follow us on

SCAN TO APPLY